सीएसआर प्रभाव मूल्यांकन
रिपोर्ट

वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए

के लिए तैयार किया गया

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
टीएचडीसी परिसर,
बाई पास रोड के पास, प्रगतिपुरम, ऋषिकेश

तैयारकर्ता
लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रस्तावना

सेवा-टीएचडीसी की सीएसआर परियोजना की प्रभाव आकलन रिपोर्ट टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी के माध्यम से टीएचडीसी हाई स्कूल, ऋषिकेश और टीएचडीसी टी.बी.पी. इंटरमीडिएट कॉलेज, बी.पुरम (टिहरी गढ़वाल) के संचालन के संबंध में है। वित्त वर्ष 2022-23 के लिए इस परियोजना के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए सितंबर, 2023 में प्रगतिपुरम, ऋषिकेश और भागीरथीपुरम, टिहरी के स्कूलों का मूल्यांकन किया गया था। सीएसआर पहल टीएचडीसी परिसर के आसपास रहने वाले गरीब और कमजोर परिवारों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से लागू की गई है।

रिपोर्ट में टीएचडीसीआईएल की पृष्ठभूमि, इसकी सीएसआर नीति, हमारी शोध पद्धति और हमारे द्वारा दोनों विद्यालयों में किए गए सर्वेक्षणों के परिणामों को शामिल किया गया है। सर्वेक्षणों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर, हमने सुझावों का एक सेट तैयार किया है जिसे हमने अंत में सम्मिलित किया है। हमने दोनों विद्यालयों के लिए ऐसी परिस्थितियों का अध्ययन भी शामिल किया है जो स्कूलों की उपलब्धियों के साथ-साथ छात्रों के सामने आने वाली चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता हैं। अंत में, हम यह कहकर निष्कर्ष निकालना चाहेंगे कि टीएचडीसी द्वारा वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके सराहनीय कार्य किया जा रहा है। छात्रों को प्रदान किया गया बुनियादी ढांचा और खेल प्रशिक्षण अंतर-जिला और अंतर-स्कूल चैंपियनशिप में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन में परिलक्षित होता है।

अभिस्वीकृति

यह प्रभाव आकलन रिपोर्ट श्री पी.के. नैथानी ओएसडी, (एस एंड ई), श्री अमरदीप, महाप्रबंधक (एस एंड ई), डॉ.ए.एन.त्रिपाठी, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री सौरभ कुशवाह, उप प्रबंधक (सामाजिक), श्री रॉबिन सिंघल और टीएचडीसीआईएल के सीएसआर प्रभाग के अन्य अधिकारियों के साथ काफी परामर्श और सहभागिता के साथ तैयार की गई है।

प्रभाव मूल्यांकन टीम ने अध्ययन को सफल बनाने के लिए ऋषिकेश और टिहरी में टीएचडीसी द्वारा संचालित विद्यालयों में लाभार्थियों के साथ भी वार्तालाप किया। यह अध्ययन ऋषिकेश और टिहरी गढ़वाल दोनों विद्यालयों के शिक्षकों, छात्रों और कर्मचारियों के सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकता था, जिन्होंने अपना पूर्ण समर्थन दिया और बहुमूल्य प्रतिक्रिया प्रदान की। हम सर्वेक्षण और मूल्यांकन अवधि के दौरान बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और सहायता प्रदान करने के लिए परियोजना स्थलों पर टीएचडीसी की संपूर्ण टीम के बहुत आभारी हैं।

शाची राय,

सहायक प्रोफेसर,

अर्थशास्त्र विभाग,

लखनऊ विश्वविद्यालय,

लखनऊ-226007

कार्यपालक विवरण

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, जो पूर्व में टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड थी, वर्तमान में नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड, विद्‌युत मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक कंपनी है। टीएचडीसी जुलाई 1988 में एक पंजीकृत कंपनी बन गई और उसे टिहरी हाइड्रो पावर कॉम्प्लेक्स और अन्य हाइड्रो परियोजनाओं के विकास, प्रचालन और अनुरक्षण का कार्य सौंपा गया। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड एक मिनी रत्न श्रेणी-I का उपक्रम है। हालाँकि, निगम पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुआ है और अब विभिन्न राज्यों के साथ-साथ भूटान में भी इसकी कई परियोजनाएँ हैं। टीएचडीसी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से विद्‌युत उत्पादन करने पर भी विचार कर रहा है। वर्तमान में टीएचडीसी के पास 16 परियोजनाओं का संग्रह है जिसमें सौर, जल, पवन और थर्मल शामिल हैं। वर्तमान में विकासाधीन एक बहुत ही महत्वपूर्ण परियोजना में झाँसी और ललितपुर में 600 मेगावाट क्षमता का सौर पार्क और उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में 800 मेगावाट क्षमता का सौर पार्क शामिल है। श्री आर.के.विश्नोई टीएचडीसीआईएल के वर्तमान अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक हैं। टीएचडीसीआईएल को विश्व स्तरीय इकाई होने पर गर्व है जो पर्यावरण और सामाजिक मूल्यों के लिए प्रतिबद्‌ध है। जैसे-जैसे कंपनी ऊर्जा संसाधनों को कुशलतापूर्वक विकसित करने के अपने कार्य में अग्रसर हो रही है। यह भी सुनिश्चित कर रही है कि 'परियोजना प्रभावित व्यक्तियों' का पुनर्वास एवं पुनःस्थापन पूर्ण ईमानदारी निष्ठा के साथ हो।

निगम एक सामाजिक रूप से जिम्मेदार संगठन होने में अपनी भूमिका के प्रति सजग है जो सतत विकास को बढ़ावा देकर समाज के साथ-साथ समुदाय में अपनी साख सुनिश्चित करने की दिशा में नियमित रूप से प्रयासरत है। इसका कार्य उन लक्ष्यों से जुड़ा है जो केंद्र सरकार को सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी मदद करते

हैं। निगम एक अटूट और सार्थक संबंध बनाने की आशा करता है जो विश्वास और दोतरफा संचार पर आधारित हो।

अपनी सीएसआर प्रतिबद्धताओं को आगे बढ़ाते एवं सहानुभूति के महत्व को समझते हुए निगम ने अपने सभी हितधारकों के साथ सतत पत्राचार, व्यवहार्यता और पारदर्शिता स्थापित करने की दिशा में कार्य किया है। अपने संगठनात्मक पदानुक्रम के हर स्तर पर कंपनी ने अंतिम परिणामों से समझौता किए बिना अनुकूलन करने की पूरी कोशिश की है - चाहे वह आर्थिक, सामाजिक या पर्यावरणीय पहलू हो।

विश्व स्तरीय ऊर्जा इकाई बनने के अपने लक्ष्य के साथ आगे बढ़ते हुए कंपनी समाज के उत्थान की दिशा में अपनी भूमिका को पूरा करने की दिशा में भी अग्रसर है। निगम ने सीएसआर कार्यक्रम शुरू किए हैं जो स्थानीय क्षेत्रों को प्राथमिकता देते हैं। किए गए प्रयासों से स्थानीय लोगों के जीवन की गुणवत्ता को समग्र रूप से सुधारने में मदद मिली है। यह समझते हुए कि कम विशेषाधिकार प्राप्त और कमजोर वर्ग भी सम्मान के पात्र हैं, निगम के प्रयासों ने समावेशी विकास को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया है जो उनकी बुनियादी जरूरतों का ख्याल रखता है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के प्रयासों से कोई अनभिज्ञ नहीं है और इसने उन सभी लोगों के बीच सराहना हासिल की है और सद्भावना पैदा की है, जिनके जीवन में निगम द्वारा प्रदान की गई मदद से सुधार हुआ है। इसके अलावा ऊर्जा विकास के पायदान पर चढ़ने के साथ-साथ सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करने के प्रयासों ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को 'हितधारकों के बीच एक सकारात्मक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार छवि को मजबूत करने' में मदद की है। इसका उद्देश्य वर्ष 2022-23 के लिए टीएचडीसी की 1 करोड़ रुपये या उससे अधिक मूल्य की सीएसआर परियोजनाओं के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का आकलन करना है। सीएसआर परियोजनाएं टीएचडीसी इंटर कॉलेज भागीरथीपुरम जिला, टिहरी गढ़वाल और टीएचडीसी हाई स्कूल, ऋषिकेश, देहरादून में शुरू की गई थीं।

संपूर्ण प्रोजेक्ट की निगरानी करने और प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने के लिए विशेषज्ञों की एक टीम को तैनात किया गया था। डॉ.शाची राय, समग्र अध्ययन की समन्वयक थीं। उनके कुशल मार्गदर्शन में, टिहरी गढ़वाल के श्री उमेश बिष्ट और सुश्री वेदिका मिश्रा, सौंपे गए कार्यों को सफलतापूर्वक करने में सक्षम हैं।

टीएचडीसी हाई स्कूल, ऋषिकेश और टीएचडीसी इंटर कॉलेज, भागीरथीपुरम, टिहरी में एक क्षेत्रीय सर्वेक्षण किया गया था। दोनों स्कूल टीएचडीसी के सीएसआर कार्यक्रमों के तहत चलाए जा रहे हैं। प्रभाव मूल्यांकन टीम ने स्कूलों का व्यापक सर्वेक्षण किया, इसमें शामिल सभी हितधारकों के साथ केंद्रित समूह चर्चा की और छात्रों और शिक्षकों से सर्वेक्षण प्रश्नावली भरने का अनुरोध किया जिससे वे उचित प्रकार से समझ सके। टीम ने स्कूल से उनकी अपेक्षाओं और उनके जीवन में कैसे सुधार आया है, इस संबंध में उनसे अनौपचारिक बातचीत भी की। अंतिम रिपोर्ट तैयार करने के लिए I4आर रणनीति का उपयोग करके गहन विश्लेषण के बाद अंतिम रिपोर्ट तैयार की गई थी।

नीति आयोग द्वारा मूल्यांकन मानदंड के रूप में शिक्षा के प्रणालीगत परिवर्तन की रूपरेखा के साथ, पांच प्रमुख क्षेत्र - 'शैक्षणिक सुधारों पर ध्यान', 'मानव क्षमता को मजबूत करना', 'जवाबदेही को बढ़ावा देना', 'प्रशासनिक वितरण प्रणालियों को मजबूत करना' और 'साझा दृष्टिकोण बनाना' एवं परिवर्तन के लिए प्रेरणा' वह आधार बन गया जिस पर टीएचडीसी के सीएसआर कार्य की प्रभावशीलता और प्रभाव को देखा गया।

इसमें शामिल सभी पक्षों को बोर्ड में सम्मिलित किया गया था, अत: उत्तर और अवलोकन दोनों ही अध्ययन को आगे बढ़ाते हैं एवं निष्कर्षों को आधार बनाते हैं। विभिन्न मानकों (टीएचडीसी हाई स्कूल मानक 1-10 कक्षा तक है) और (टीएचडीसी इंटर कॉलेज मानक 6-12 कक्षा तक है) को पूरा करने के बावजूद, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, बच्चों और अभिभावकों के साथ बातचीत में विचारों की एक समान धारा प्रभावी रही।

हमारे निष्कर्षों के आधार पर यह देखा जा सकता है कि प्रदान की गई सहायता का उपयोग बुनियादी ढांचे (खेल के मैदानों, प्रयोगशालाओं, कक्षाओं और सामान्य रूप से स्कूल भवन) के रखरखाव के लिए किया जा रहा है, स्कूल की फीस कम रखी है (जिससे हाशिए पर रहने वाले लोगों को लाभ हुआ है) जिन लड़कियों की शिक्षा बाधित हो सकती थी, उन्हें भी नामांकित किया गया है), समूह गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन करना (जो टीम भावना को बढ़ावा देते हैं और उनमें नेतृत्व के गुण विकसित करने में मदद करते हैं) और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे शिक्षक रखना जो उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र में मार्गदर्शन और सलाह देने के लिए बेहद योग्य हों जिससे एक बच्चा पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन कर सके।

प्रभाव मूल्यांकन टीम ने पाया कि टीएचडीसी के योगदान से स्थानीय लोगों की मानसिकता में बदलाव आया है, जो अब उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छी शिक्षा के महत्व को समझते हैं और आशा करते हैं कि आज उन्हें जो बिना शर्त मदद मिली है, उसके कारण उनका बच्चा एक निष्पक्ष समाज में बड़ा होकर अपनी क्षमता हासिल करेगा। इस स्कूल की रीढ़ बनने वाले शिक्षकों ने इस दिशा में अथक प्रयास किया है। वे इस बात पर सर्वसम्मति से सहमत हैं कि सभी बच्चों के साथ समान व्यवहार करना, उन्हें प्रेरित करना और उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाना कि यदि वे गंभीरता से शिक्षा ग्रहण करते है तो वे निश्चित रूप से उन्नति कर सकते हैं, एक ऐसा कार्य है जिससे समझौता नहीं किया जा सकता है।

टीएचडीसी के हितधारक भी शंकाओं के समाधान में बहुत सहयोगी रहे हैं, फीडबैक देते हुए वे स्वीकार करते हैं कि उन्हें अभी भी एक लंबी यात्रा तय करनी है क्योंकि वे जो प्राप्त करना चाहते हैं और जो प्राप्त किया गया है उसके बीच अंतर अभी भी मौजूद है। इस रिपोर्ट ने मूल्यांकन टीम को सेवा-टीएचडीसी की दृढ़ भावना की सराहना करने में मदद की है जो देश के भविष्य बनने वाले सभी बच्चों के लिए समान शैक्षिक अवसर सुनिश्चित करने में योगदान देने के अपने लक्ष्य हेतु प्रतिबद्ध हैं।

हालाँकि अभी बहुत कुछ प्राप्त करना शेष है, टीएचडीसी के प्रयास इस कहावत को चरितार्थ करते हैं, “एक आदमी को एक मछली दो और तुम उसे एक दिन के लिए खाना खिलाओ। या एक आदमी को मछली पकड़ना सिखाओ और तुम उसे जीवन भर खाना खिलाओगे।” यहां स्कूल, प्रत्येक बच्चे को साधन उपलब्ध कराने में योगदान दे रहे हैं, जिससे वे भविष्य में स्वतंत्र रूप से आत्मनिर्भर हो सकें।

मूल्यांकन टीम

नाम	**पदनाम**
शाची राय	वरिष्ठ अनुसंधान विशेषज्ञ/ समग्र समन्वयक
उमेश बिष्ट	कनिष्ठ अनुसंधान विशेषज्ञ
वेदिका मिश्रा	टीम के सदस्य

विषय

परिचय..10

टीएचडीसीआईएल के बारे में...11

दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली...15

टीएचडीसी हाई स्कूल, ऋषिकेश...25

टीएचडीसी इंटर कॉलेज, टिहरी...33

निष्कर्ष और सुझाव...47

विषय का अध्ययन...51

संदर्भ...55

परिचय

सीएसआर की अवधारणा:

संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन के अनुसार, "कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व एक प्रबंधन अवधारणा है जिसके माध्यम से कंपनियां अपने व्यापार संचालन और अपने हितधारकों के साथ बातचीत में सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याओं को एकीकृत करती हैं। सीएसआर को आम तौर पर उस शैली के रूप में समझा जाता है जिसके माध्यम से एक कंपनी आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक अनिवार्यताओं ("ट्रिपल-बॉटम-लाइन-दृष्टिकोण") का संतुलन प्राप्त करती है, साथ ही शेयरधारकों और हितधारकों की अपेक्षाओं को भी पूरा करती है।

इस सीएसआर प्रभाव आकलन रिपोर्ट में नीति आयोग द्वारा शिक्षा के प्रणालीगत परिवर्तन के ढांचे के आधार पर मूल्यांकन मानदंडों को उपयोग में लाने का प्रयास किया गया है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की पहल शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करने की दिशा में कितनी उपयोगी रही है और यदि कोई कमी हो तो उसके निवारण हेतु सुझाव दिया जाए।

प्रभाव आकलन (एक सिंहावलोकन)

ओईसीडी (2014) के अनुसार प्रभाव मूल्यांकन का उद्देश्य यह आकलन करना और जांच करना है कि एक 'नीतिगत हस्तक्षेप' लोगों, उनके आस-पास के वातावरण के साथ-साथ रिश्तों में कैसे बदलाव ला सकता है जो कि उन सुझावों के परिणामस्वरूप हुए विकास का परिणाम हो सकता है।

प्रभाव आकलन इस बात पर प्रकाश डालता है कि निवेश किए जा रहे संसाधनों को बेहतर बनाने और अधिकतम करने के लिए क्या किया जा सकता है, ताकि वे सकारात्मक परिणाम दे सकें।

साथ ही यह उन संभावित समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है जो निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधा बन सकती हैं। ठोस निर्णय लेने के लिए सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए प्रभाव मूल्यांकन स्थायी समाधान प्रदान करने की दिशा में अपने उद्देश्यों के बारे में काफी स्पष्ट है जो दीर्घकाल में प्रासंगिक हो सकते हैं।

टीएचडीसीआईएल के बारे में

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड विद्युत क्षेत्र का अग्रणी एवं लाभ अर्जित करने वाला सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। इसे कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत जुलाई-1988 में एक सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी के रूप में पंजीकृत किया गया था। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को अक्टूबर-2009 में 'मिनी रत्न' श्रेणी -1 का दर्जा दिया गया था तथा जिसे भारत सरकार द्वारा जुलाई 2010 में अपग्रेड किया गया था। वर्तमान में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में अंशभागिता एनटीपीसी लिमिटेड और उत्तर प्रदेश सरकार के मध्य 74.496 और 25.504 के अनुपात में साझा की जाती है।

सीएसआर नीति

टीएचडीसी ने सीएसआर पर एक नीति बनाई थी जिसे 'कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व योजना - सामुदायिक विकास (सीएसआर-सीडी)' के नाम से जाना जाता है, जिसे वर्ष 2008-09 से अपनाया गया था। इस नीति के बाद, डीपीई ने अप्रैल, 2010 में दिशानिर्देश जारी किए थे, जिसके बाद टीएचडीसी ने 'टीएचडीसी सीएसआर-सीडी योजना 2010 शुरू की थी। इसके बाद 2012 में सतत विकास पर एक अलग नीति बनाई गई, जो सितंबर, 2011 में जारी डीपीई दिशानिर्देशों पर आधारित थी। डीपीई के उपरोक्त दिशानिर्देशों के अनुसार, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास को दो अलग-अलग विषयों के रूप में माना गया और तदनुसार एमओयू मूल्यांकन हेतु जिनका अलग से आकलन किया गया। अप्रैल, 2013 से सीपीएसई के लिए सीएसआर और सततता पर जारी संयुक्त दिशानिर्देशों के जवाब में टीएचडीसी की सीएसआर और सततता नीति 2013 बोर्ड की मंजूरी के बाद लागू की गई थी।

धारा 135 कंपनी अधिनियम, 2013 के कार्यान्वयन के साथ, सीपीएसई सहित सभी पात्र कंपनियों की भागीदारी को नियंत्रित करती है।

सीपीएसई द्वारा सातवीं अनुसूची में उल्लिखित गतिविधियों पर खर्च किया जाना था। टीएचडीसी की 2021 सीएसआर नीति के अनुसार, सीएसआर और सततता परियोजनाएं सेवा-टीएचडीसी एवं टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी (टीईएस) के माध्यम से कार्यान्वित की जाएंगी।

सीएसआर विजन

सामाजिक रुप से उत्तरदायी कारपोरेट, समाज एवं समुदाय में मूल्य निर्माण को निरंतर बढ़ाना तथा सतत विकास को प्रोत्साहित करना।

सीएसआर मिशन

- ❖ परस्पर संचार के माध्यम से प्रमुख हितधारकों के साथ संबंध आधारित सतत मूल्य स्थापित करना।
- ❖ मानवीय दृष्टिकोण के साथ सीएसआर कार्यक्रम संचालित करना।
- ❖ हितधारकों के साथ सीएसआर एवं सततता पहलों को पारदर्शिता के साथ शेयर करना।
- ❖ आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय सतत तरीके से अपना व्यवसाय चलाने के लिए संगठन में सभी स्तरों पर प्रतिबद्धता बढ़ाया जाना सुनिश्चित करना।
- ❖ इसके प्रकार्यात्मक केंद्रों में तथा उनके आस-पास समुदायों के लाभ हेतु प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सीएसआर कार्यक्रम संचालित करना तथा जिसके परिणामस्वरुप स्थानीय जनता के जीवन की गुणवत्ता एवं आर्थिक भलाई में वृद्धि हो सके।

- ❖ समाज के वंचित, दबे कुचले, तिरस्कृत एवं कमजोर तबको की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति एवं समेकित विकास को प्रोत्साहित करना।
- ❖ हितधारकों के मध्य सीएसआर पहलों के माध्यम से टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की गुडविल एवं गर्व उत्पन्न करना और कारपोरेट इकाई के रूप में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की सकारात्मक एवं सामाजिक जिम्मेदारी की छवि को सुदृढ़ करने में सहायता करना।
- ❖ जिस क्षेत्र में, जहां टीएचडीसीआईएल सीएसआर कार्यक्रम चलाएगा, उन्हें उस उद्देश्य के अनुसार शीर्षक दिया जाएगा जिसे वे प्राप्त करना चाहते हैं। वे इस प्रकार हैं:
- ❖ i.टीएचडीसी निरामय - पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता और पेयजल परियोजनाएं
- ❖ ii. टीएचडीसी जागृति - शिक्षा पहल
- ❖ iii. टीएचडीसी दक्ष - आजीविका सृजन और कौशल विकास पहल
- ❖ iv. टीएचडीसी उत्थान - ग्रामीण विकास
- ❖ v.टीएचडीसी समर्थ - महिला सशक्तिकरण पहल
- ❖ vi. टीएचडीसी सक्षम - वृद्धों और दिव्यांगों की देखभाल
- ❖ vii. टीएचडीसी प्रकृति - पर्यावरण संरक्षण पहल
- ❖ viii. टीएचडीसी विरासत - कला एवं संस्कृति संरक्षण एवं संवर्धन पहल।
- ❖ ix. टीएचडीसी क्रीड़ा - खेल प्रोत्साहन पहल

अध्ययन का विषय क्षेत्र

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, अपने योगदान के दृष्टिकोण की पुष्टि करते हुए शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु दो विद्यालयों, टीएचडीसी हाई स्कूल और टीएचडीसी इंटर कॉलेज चला रहा है। लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग ने इन दोनों स्कूलों में शिक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में सीएसआर के प्रभाव का आकलन किया है।

इस रिपोर्ट का दायरा निम्नलिखित का आकलन करना है:

- कार्यक्रम के हस्तक्षेप से किसी भी परिवर्तन की पहचान करना परिवर्तनों और कार्यक्रम के प्रारूप के बीच उपयोगी संबंध स्थापित करना और परिवर्तन के विस्तार को मापना।
- विशेष रूप से परियोजना प्रभावशीलता, दक्षता, प्रासंगिकता, प्रदर्शन, सततता और कवरेज सहित व्यापक और प्रमुख एवं रणनीतिक प्रदर्शन संकेतकों की एक विस्तृत श्रृंखला पर ध्यान केंद्रित करना तथा उनका आकलन करने का प्रयास करना।
- यह निर्धारित करना कि कार्यक्रमों को कितने प्रभावी ढंग से एवं कुशलता से लागू किया गया है और किस सीमा तक शुद्ध लाभ प्राप्त किया गया है।
- इस बात की जांच करना कि हस्तक्षेपों ने किस हद तक अपने उद्देश्यों (आउटपुट और परिणाम) को हासिल किया है या भविष्य में ऐसा करेंगे?
- कार्यक्रमों को अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिए सुझाव (यदि कोई हो)
- लोगों और समुदाय पर कार्यक्रमों/हस्तक्षेपों के इच्छित और अनपेक्षित, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभावों को मापना (जहाँ भी संभव हो)?
- यह परिभाषित करना कि हस्तक्षेप ने लक्षित लाभार्थियों और हितधारकों की संपूर्ण स्थिति पर कैसे प्रभाव डाला है?

दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली

उत्तराखंड के दो विद्यालयों में बेहतर विद्यालयी शिक्षा के परिणाम प्राप्त करने की दिशा में सीएसआर के प्रभाव का व्यापक विश्लेषण करने के लिए तीन सौ साठ डिग्री के दृष्टिकोण अपनाये गए है। अपनाए गए दृष्टिकोण को नीचे दिए गए प्रस्तुतिकरण के माध्यम से समझा जा सकता है:

पहचान

सीएसआर के प्रभाव को समझने के लिए परियोजना की सीमाएँ निर्धारित की जाती हैं।

डेटा संग्रहण

हितधारकों को शामिल किया जाता है, स्थिति की बारीकियों को समझने के लिए परामर्श और बातचीत के कई दौर आयोजित किए जाते हैं।

विश्लेषण

दस्तावेज़ों की व्यापक समीक्षा, तथ्यों की दोतरफा जांच करना और यदि कोई संदेह हो तो उसे दूर करना, साथ ही इसमें शामिल पूरी टीम के विचार प्राप्त करना।

टीएचडीसी हाई स्कूल और टीएचडीसी इंटर कॉलेज, उत्तराखंड को यह निर्धारित करने के लिए चुना गया था कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड का सीएसआर योगदान जरूरतमंद लोगों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने में कितना प्रभावशाली रहा है।

आगे बढ़ने के लिए स्कूल प्रबंधन के साथ-साथ शिक्षकों और छात्रों के सहयोग की आवश्यकता थी। मूल्यांकनकर्ता द्वारा प्रदान की गई एक प्रश्नावली शिक्षकों और छात्रों द्वारा भरी गई थी ताकि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के सीएसआर योगदान के बाद भी मौजूदा कमियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सके।

सीएसआर के तहत बजट आवंटन के साथ-साथ दी गई प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण मध्यस्थता के महत्व और कमजोरियों को समझने और यह पता लगाने के लिए किया गया कि दोनों विद्यालयों को कैसे लाभ हुआ और उनमें अभी भी क्या कमी है।

प्रभाव आकलन रिपोर्ट तैयार करने के लिए कार्यभार निष्पादित करने के लिए I4R दृष्टिकोण

उत्तराखंड के दो विद्यालयों पर सीएसआर के प्रभाव को समझने के लिए एक विस्तृत शोध किया गया। इसके अलावा बेहतर समझ के लिए एक I4R दृष्टिकोण लागू किया गया था।

प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट के लिए I4R दृष्टिकोण

- **प्रयोजन:** प्रारंभ से ही प्रभाव मूल्यांकन का लक्ष्य यह समझना था कि टीएचडीसी हाई स्कूल और टीएचडीसी इंटर कॉलेज के माध्यम से बेहतर शिक्षा परिणामों की प्राप्ति को प्रोत्साहित करने की दिशा में टीएचडीसी का सीएसआर की मध्यस्थता कितनी उपयोगी रही है। एक स्पष्ट लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए एक विस्तृत योजना की रूपरेखा तैयार की गई कि कैसे निहित पार्टियों को एक साथ लाया जा सकता है ताकि आगे बढ़ना आसान हो।

- कार्यान्वयन: एक बार जब योजना पर सर्वसम्मति से सहमति हो गई, तो आगे की कार्रवाई के लिए प्रभाव मूल्यांकन के लिए नोडल अधिकारी से संपर्क किया गया। रिपोर्ट की आवश्यकता और अन्वेषक इसे कैसे आगे बढ़ाना चाहता है, इस पर नोडल अधिकारी और दो विद्यालयों के प्रबंधन के साथ चर्चा की गई। जैसे ही

विश्वास निर्माण के उपाय शुरू किए गए, प्रश्नावली को उनकी सर्वोत्तम क्षमताओं के अनुसार भरने का अनुरोध किया गया।

- ❖ गहन तैयारी: सीएसआर के तहत किए गए संसाधन आवंटन को ध्यान में रखते हुए उत्तरों की जांच की गई।
- ❖ व्याख्या: सभी प्रतिक्रियाओं को छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों के साथ भी जांचा गया। इसके अलावा, किसी भी अव्यवस्थता को दूर करने और प्राप्त प्रतिक्रियाओं की वास्तविकता की पुष्टि करने के लिए व्यक्तिगत रूप से बातचीत की गई। सभी पक्षों के साथ अधिक चर्चा की गई और सीएसआर की प्रभावशीलता में सुधार के लिए सुझाव दिए गए।
- ❖ खुलासा: परामर्श, सुझावों और फीडबैक के अंतिम दौर के बाद, जहां आवश्यक हो वहां बदलावों को शामिल करते हुए टीएचडीसी हाई स्कूल के साथ-साथ टीएचडीसी इंटर कॉलेज में टीएचडीसी द्वारा सीएसआर के परिणाम पर प्रकाश डालने वाली एक अंतिम प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार की गई है। डेटा वस्तुनिष्ठ रूप से एकत्र किया गया था ताकि सकारात्मक प्रभाव और उन क्षेत्रों को उजागर किया जा सके जहां सुधार किए जा सकते हैं।

नीचे दर्शाए गए ।4R दृष्टिकोण ने प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने में किए गए प्रयासों का सारांश दिया है।

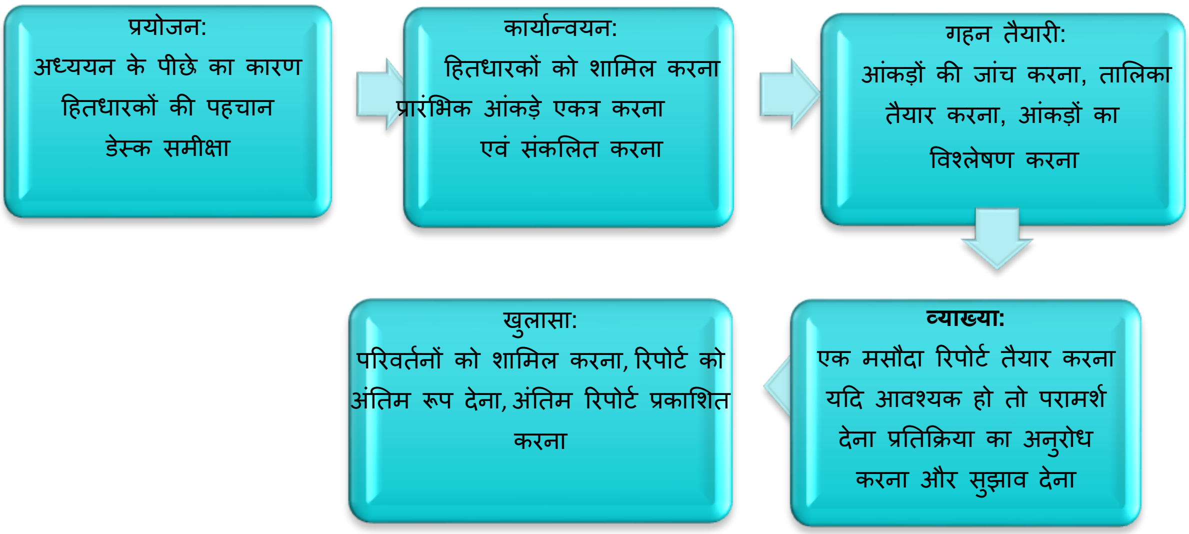

मूल्यांकन के मानदंड

कुछ प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्टों ने अपने मूल्यांकन मानदंडों को ओईसीडी ढांचे पर आधारित करते हुए, इस रिपोर्ट ने एक अलग दृष्टिकोण अपनाया है जहां मूल्यांकन मानदंड नीति आयोग द्वारा शिक्षा के प्रणालीगत परिवर्तन के ढांचे पर आधारित हैं।

नीति आयोग ने "विद्यालयी शिक्षा का प्रणालीगत परिवर्तन" शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी करते हुए देश की विद्यालय शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए पांच व्यापक क्षेत्रों के तहत 11 उपायों की सिफारिश की है।

जबकि यह रिपोर्ट टीएचडीसी द्वारा सीएसआर के तहत किए गए योगदान को प्रकाश में लाने का प्रयास करती है, प्रभाव आकलन रिपोर्ट यह देखने का इरादा रखती है कि क्या किए गए विकास नीति आयोग के दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं। इसके अलावा, इस रिपोर्ट के माध्यम से सुझाव दिए जाएंगे कि क्या हासिल किया गया है और सीएसआर के माध्यम से और क्या आवश्यक हो सकता है ताकि शैक्षिक परिणाम प्राप्त किए जा सकें जो राष्ट्र की आकांक्षा और नीति आयोग के 'बेहतर स्कूली शिक्षा प्रणाली' के दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं।

❖ नीचे दिया गया डायग्राम नीति आयोग की वेबसाइट से लिया गया है। इसमें पाँच व्यापक क्षेत्र और ग्यारह उपाय शामिल हैं जिन्हें वांछनीय माना गया है।

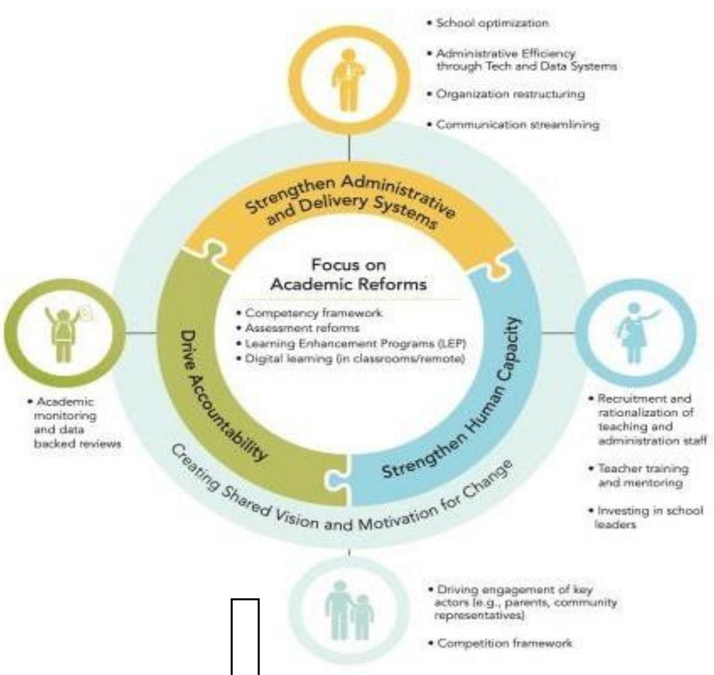

- स्कूल अनुकूलन
- प्रौद्योगिकी और डेटा प्रणाली के माध्यम से प्रशासनिक दक्षता
-संगठन का पुनर्गठन
- संचार स्ट्रीमिंग
- प्रशासनिक एवं वितरण प्रणाली को मजबूत करें
शैक्षणिक सुधारों पर ध्यान दें
- योग्यता ढांचा
- मूल्यांकन सुधार
- शिक्षण संवर्धन कार्यक्रम (एलईपी)
-डिजिटल शिक्षण (कक्षाओं/दूरस्थ में)
- जवाबदेही तय करें
-मानव क्षमता को मजबूत करें
- परिवर्तन के लिए साझा दृष्टिकोण और प्रेरणा बनाना
- शैक्षणिक निगरानी और डेटा समर्थित समीक्षा
-शिक्षण और प्रशासन स्टाफ की भर्ती और युक्तिकरण
- शिक्षक प्रशिक्षण और निगरानी
- स्कूल नेताओं में निवेश करना
- मुख्य कारक (अर्थात माता-पिता, समुदाय के प्रतिनिधि) की संलग्नता
- प्रतियोगिता रूपरेखा

इसके अलावा, आंकड़ों के बाद पांच प्रमुख क्षेत्रों का थोड़ा विस्तार से यह पता चलता है कि प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट में क्या शामिल करने का इरादा है।

इस दृष्टिकोण के आधार पर उत्तराखंड के दो विद्यालयों - टीएचडीसी हाई स्कूल और टीएचडीसी इंटर कॉलेज के वरिष्ठतम कक्षाओं के शिक्षकों और छात्रों दोनों पर एक सर्वेक्षण किया गया था।

शैक्षणिक सुधारों पर ध्यान दें

- ✓ क्या शिक्षा का अधिकार अधिनियम जैसे नए कानून मददगार रहे हैं?
- ✓ क्या शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच का विचार बेहतर शिक्षण परिणामों में परिवर्तित हुआ है?

मानव क्षमता को सुदृढ़ बनाना

- ✓ क्या बेहतर योग्यता वाले शिक्षक बेहतर मार्गदर्शक बनते हैं?
- ✓ क्या शिक्षकों के बीच कौशल उन्नयन छात्रों के लिए बेहतर अनुभव में परिवर्तित होता है?

जवाबदेही बढ़ाएँ

- ✓ अपने प्रत्येक छात्र की ताकत और कमजोरियों के बारे में जागरूकता।
- ✓ एक कार्य योजना लागू करना जो प्रतिभाशाली बच्चे की जरूरतों को पूरा कर सके और साथ ही यह भी सुनिश्चित करे कि कमजोर छात्र भी पीछे न रहे।

प्रशासनिक एवं वितरण प्रणाली को सुदृढ़ बनाना

- ✓ यह सुनिश्चित करना कि बेहतर शिक्षण परिणाम सुनिश्चित करने के लिए विद्यालयों के पास उचित योजना हो।
- ✓ ऐसे उपाय लागू करना जो करके सीखने को प्रोत्साहित करते हैं।

परिवर्तन के लिए साझा दृष्टिकोण और उत्साह

- ✓ आत्म-प्रभावकारिता और सुदृढीकरण उपाय- शिक्षकों और छात्रों दोनों में बेहतर के लिए बदलाव ला सकते हैं।

अनुसंधान परिकल्प

प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट का उद्देश्य समग्र रूप से यह विश्लेषण करना है कि टीएचडीसी के सीएसआर प्रयास सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में कितने सफल रहे हैं।

सर्वेक्षण उपकरण

सर्वेक्षण उपकरण में शिक्षकों और छात्रों के लिए क्रमशः 10 प्रश्नों के साथ अलग-अलग प्रश्नावली शामिल थी। उत्तरदाताओं की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए प्रश्नावली हिंदी भाषा में तैयार की गई थी।

छात्रों से एक प्रश्नावली के माध्यम से उन्हें विद्यालयों में प्रदान की जाने वाली शैक्षिक गुणवत्ता, बुनियादी ढांचे और अन्य सुविधाओं, जल स्वच्छता और स्वास्थ्य सुविधाओं और पोषण की समझ का आकलन करने के लिए प्रत्येक छात्र से प्रश्न पूछे गए थे। यह क्षेत्र, नीति आयोग द्वारा सुझाए गए पांच प्रमुख क्षेत्रों की पुष्टि में हैं। शिक्षकों से उनकी शैक्षिक योग्यता, एक शिक्षक के रूप व्यतीत अवधि, बेहतर शिक्षण परिणामों को आगे बढ़ाने के लिए योजना और संगठनात्मक कौशल के बारे में पूछताछ की गई। सर्वेक्षण का उद्देश्य यह भी पता लगाना था कि क्या शिक्षक अपने कौशल में सुधार करने में रुचि रखते हैं और क्या वे विद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं से संतुष्ट हैं।

नमूने का चयन

उत्तराखंड से टीएचडीसी हाई स्कूल और टीएचडीसी इंटर कॉलेज जो टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के सीएसआर के तहत लाभार्थी हैं इनको नमूने के तौर पर चयन किया गया था।

सर्वेक्षण प्रक्रिया

यह सर्वेक्षण उत्तराखंड में 2022-23 के लिए टीएचडीसी हाई स्कूल और टीएचडीसी इंटर कॉलेज पर आयोजित किया गया था। प्रक्रिया और प्रश्नावली को इस तरह परिभाषित किया गया था कि शिक्षकों और छात्रों द्वारा इसका उत्तर सरलता से दिया जा सके। प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट की तैयारी के दौरान मूल्यांकन टीम द्वारा विभिन्न माध्यमिक और प्राथमिक अनुसंधान उपकरणों का उपयोग किया गया था। शोध अध्ययन में प्रयुक्त द्वितीयक शोध उपकरण इस प्रकार हैं:

डेस्क अनुसंधान

प्रभाव मूल्यांकन टीम प्रासंगिक दस्तावेज़ एकत्र करने के लिए दोनों विद्यालयों के कार्यालय में गई। इसके अतिरिक्त, आवश्यक अनुमति के बाद टीम ने कर्मचारियों से बात की और विद्यालय का भ्रमण किया, जिसके लिए रिपोर्ट प्रस्तुत की जानी थी। कर्मचारियों को एक प्रश्नावली प्रस्तुत की गई और उनसे इसके लिए वास्तविक प्रतिक्रियाएँ प्रदान करने का अनुरोध किया गया।

इसके बाद, स्टाफ से प्राप्त इनपुट, सेवा-टीएचडीसी के सीएसआर हस्तक्षेप के सदस्यों और स्कूल में किए गए अवलोकनों के आधार पर, सभी प्रासंगिक दस्तावेजों की जांच करके कच्चे आंकड़ों का संकलन रिपोर्ट तैयार करने की दिशा में उठाया गया यह पहला कदम था।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की वेबसाइट, समाचार पत्रों के लेखों और पिछले प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्टों से भी आंकड़े और जानकारी एकत्र की गई थी। एकत्र किए गए सभी दस्तावेजों से सीएसआर पहल और दोनों विद्यालयों में बेहतर शिक्षा परिणाम प्राप्त करने के लिए किए गए प्रयासों की व्यापक समझ हासिल करने में मदद मिली है।

विषय अध्ययन दृष्टिकोण

वास्तविक प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने के लिए गहन विश्लेषण किया गया। प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट के लिए, जो 10 शिक्षकों और 20 इंटर-कॉलेज छात्रों द्वारा उत्तर दिए गए प्रश्नावली पर आधारित है (वरिष्ठ छात्रों को प्रश्नावली भरने के लिए कहा गया था क्योंकि उन्हें इस बारे में बेहतर समझ होगी कि स्कूल में क्या है और इसके लिए और क्या किया जा सकता है) वहां का वातावरण अध्ययन के लिए अधिक अनुकूल है)। इसके अलावा अन्य विद्यार्थियों व शिक्षकों से मौखिक रूप से फीडबैक लिया गया।

विषय अध्ययन दृष्टिकोण को इसलिए अपनाया गया क्योंकि प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट सभी संबंधित पक्षों के साथ विस्तृत चर्चा के बिना तैयार नहीं की जा सकती थी। खोजी दृष्टिकोण, एक-एक साक्षात्कार और बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों के साथ अनौपचारिक बातचीत ने रिपोर्ट तैयार करने में मदद की। चूंकि कई हितधारकों से परामर्श किया गया तो विद्यालय की शक्ति और कमजोरियों को बेहतर ढंग से समझा गया। इन सभी ने बाद में उन सफल कहानियों को सामने लाने में मदद की जहां सेवा-टीएचडीसी की सीएसआर शाखा का योगदान उन सपनों को साकार करने में सहायक रहा है, जो टीएचडीसी द्वारा बढ़ाए गए मदद के बिना सुरंग के अंत की कभी रोशनी नहीं देख पाते।

केंद्रित समूह चर्चा

सभी हितधारकों के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने वाली अपेक्षाओं और वर्तमान सुविधाओं के संबंध में बातचीत की गई। एक धारणा बनी कि एक क्षेत्र की चुनौतियाँ दूसरे क्षेत्र से भिन्न होती हैं। कई दृष्टिकोण सामने आए कि सेवा-टीएचडीसी द्वारा मदद का हाथ बढ़ाने के बाद से स्कूल को क्या लाभ हुआ है। साथ ही इस बात की जानकारी मिली कि क्या कमी थी और आगे के लक्ष्यों को पूरा करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संबंध में अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए और क्या प्रयास करने की आवश्यकता है।

डेटा संग्रह के उपकरण

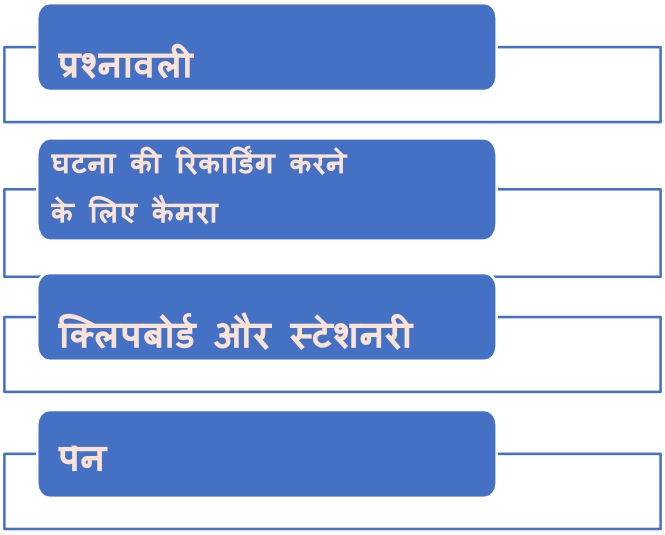

अध्ययन और विश्लेषण उद्देश्यों के लिए जानकारी एकत्रित करने के लिए आंकड़े संग्रह दृष्टिकोण के प्राथमिक और माध्यमिक तरीकों का उपयोग किया गया था।

फ़ील्ड सर्वेक्षण और आंकड़ों का संग्रह

टीएचडीसी हाई स्कूल, प्रगतिपुरम, ऋषिकेश

टीएचडीसी हाई स्कूल प्रगति पुरम ऋषिकेश, ऋषिकेश उत्तराखंड में स्थित है। विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक की शिक्षा प्रदान की जाती है और यह सह-शैक्षिक है। विद्यालय का शैक्षणिक सत्र प्रत्येक वर्ष अप्रैल माह में प्रारंभ होता है और शिक्षा के माध्यम में हिंदी को उपयोग किया जाता है। प्रत्येक मौसम में विद्यालय तक पहुंचने के लिए सड़क खुली रहती है।

उत्तराखंड बोर्ड से संबद्ध, विद्यालय का पक्का बुनियादी ढांचा काफी अच्छी स्थिति में है। प्रत्येक मानक के लिए अलग-अलग कक्षाएँ हैं। इसके अलावा, विशेष रूप से अन्य उद्देश्यों के लिए, सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों के लिए अलग कमरे भी बनाए गए हैं।

वरिष्ठतम कक्षाओं के 20 छात्रों पर एक सर्वेक्षण किया गया क्योंकि वे प्रश्नावली को बेहतर ढंग से समझने और वास्तविक उत्तर देने में सक्षम होंगे। शेष विद्यार्थियों से मौखिक बातचीत हुई। विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की कुल संख्या नीचे दिए गए चित्र द्वारा दर्शाई गई है:

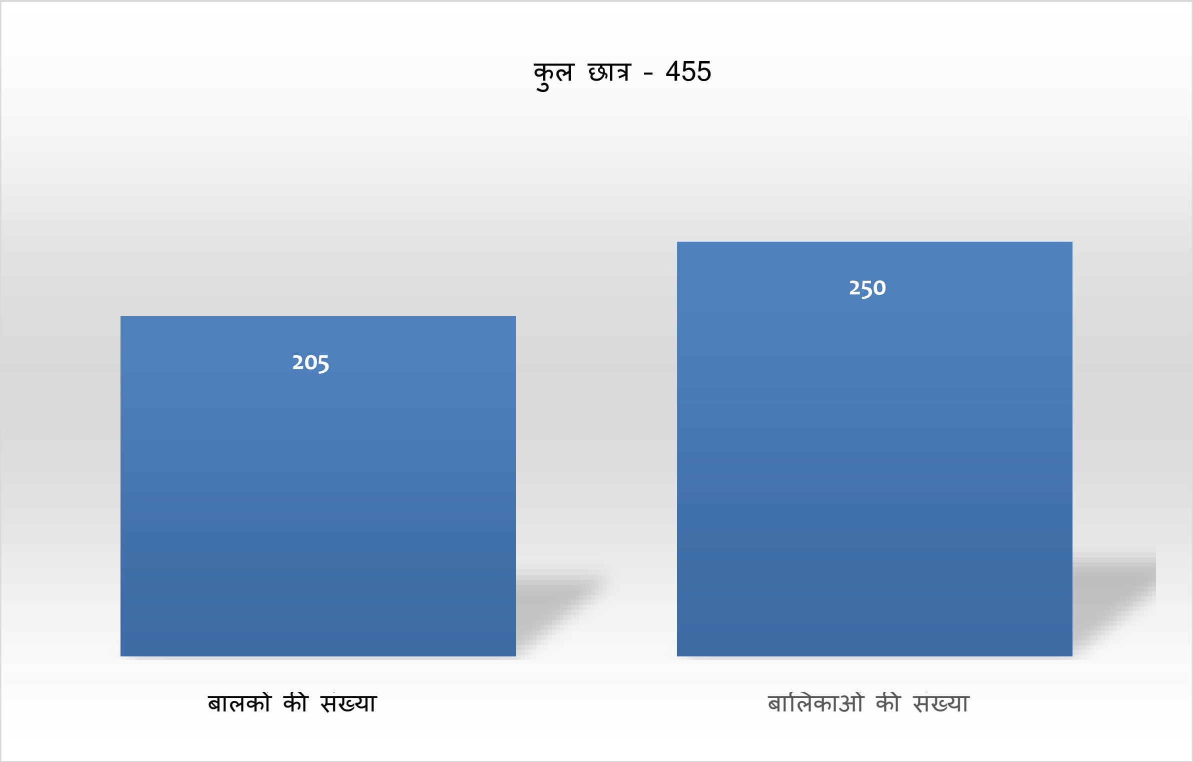

कुल छात्र - 455
205
250
बालको की सख्या
बालिकाओ की सख्या

छात्रों का सर्वांगीण विकास विद्यालय का उद्देश्य है। शिक्षाविदों पर विद्यालय का महत्व अकादमिक परिणामों से साबित होता है, जहां निम्नलिखित छात्र कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षा (2022-23) में शीर्ष पांच में स्थान पर रहे।

10वीं बोर्ड परीक्षा में प्राप्त प्रतिशत (शीर्ष 5 छात्र)

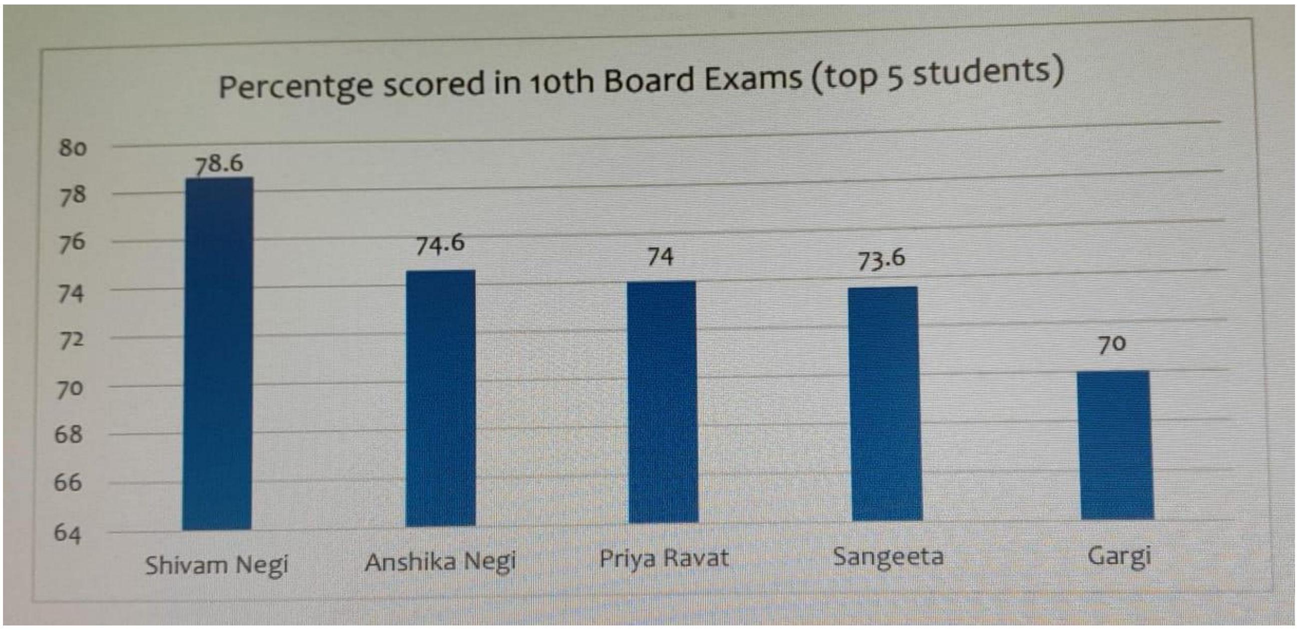

शिक्षा के अलावा समग्र प्रगति सुनिश्चित करने वाली अन्य गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती हैं। 10वीं कक्षा के छात्रों ने 20 अप्रैल, 2022 को भारतीय खाद्य निगम द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लिया। वे किसान हितों की रक्षा करने और देश में किसी भी भोजन की कमी को रोकने के लिए भोजन के बफर स्टॉक बनाए रखने की दिशा में सरकार द्वारा किए गए प्रयासों की समझ विकसित करने में सक्षम थे।

21 जून को योग दिवस का आयोजन जिसमें शिक्षक और छात्र दोनों भाग लेते हैं, इस बात को रेखांकित करता है कि स्कूल शारीरिक स्वास्थ्य को कितना महत्व देता है और 16 जुलाई 2022 को मनाए जाने वाले शांति, समृद्धि और पर्यावरण संरक्षण के त्योहार हरेला पर्व में छात्रों और शिक्षकों ने वृक्षारोपण अभियान में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इससे पता चलता है कि स्कूल प्रबंधन ने अपने शिक्षकों के साथ मिलकर बच्चों में अपने उत्तरदायित्वों विकसित करने की पहल की है, जहां पर्यावरण की सुरक्षा करने को प्राथमिकता दी गई है।

09 सितंबर, 2022 को रेड क्रॉस सोसाइटी का मैजिक शो, 04 दिसंबर, 2022 को क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र का दौरा, 22 सितंबर, 2022 को वाद-विवाद प्रतियोगिता, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और 24 दिसंबर, 2022 को इंद्रमणि जयंती (श्री इंद्रमणि को उत्तराखंड के गांधी मानते है) का समारोह यह स्पष्ट करता है कि स्कूल सभी क्षेत्रों में छात्रों की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए भरसक प्रयास कर रहा है। टीएचडीसी के सीएसआर के सहयोग बिना यह इस तरह का विकास करना निश्चित रूप से कठिन होगा।

पाई चार्ट और बार आरेखों के माध्यम से अग्रिम विश्लेषण से स्कूल का सामर्थ्य और कमियों के बारे में बेहतर तरिके से समझा जा सकता है। कुछ प्रतिक्रियाएं और उनकी व्याख्याएं निम्न प्रकार से हैं:

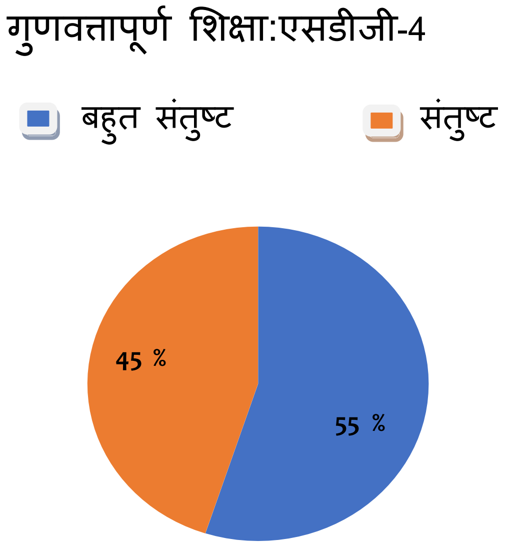

स्कूल में उपस्थित होने के प्रति उच्च संतुष्टि स्तर और उत्साह यह दर्शाता है कि स्कूल, युवा मन में सीखने की इच्छा विकसित करने में सफल रहा है।

जबकि सभी छात्रों ने उत्तर दिया कि वे प्रतिदिन स्कूल जाने के लिए उत्साहित हैं, 55% बहुत संतुष्ट थे और 45% छात्रों ने उत्तर दिया कि वे स्कूल में प्राप्त हुई शिक्षा से संतुष्ट थे।

स्कूल में उपस्थित होने के प्रति उच्च संतुष्टि स्तर और उत्साह यह दर्शाता है कि स्कूल, युवा मन में सीखने की इच्छा विकसित करने में सफल रहा है, यह देखते हुए कि यह एक लंबा रास्ता तय कर सकते हैं, वे देश का लाभांश हैं, जिनके कंधों पर देश का भविष्य टिका हुआ है। इससे देश को सतत विकास लक्ष्य 4 (एसडीजी-4) की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने में भी सहायता मिलेगी।

जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य (वाश): एसडीजी-6

स्वच्छ पेयजल और एक कार्यात्मक शौचालय की उपलब्धता यह सुनिश्चित करती है कि एसडीजी-6 के जल और स्वच्छता पहलू का ध्यान रखा जा रहा है, यह वांछनीय है कि बच्चों के लिए साबुन और पानी दोनों उपलब्ध कराए जाएं ताकि स्वच्छता भी बनी रहे। साबुन से हाथ धोने की आदत डालने से कई बीमारियों को रोकने में काफी सहायता मिलती है। निम्नलिखित चार्ट हमारे सर्वेक्षण के माध्यम से वाश के संबंध में पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों को ग्राफिक रूप से दर्शाते हैं।

प्रश्न: पेयजल का मुख्य स्त्रोत क्या है?

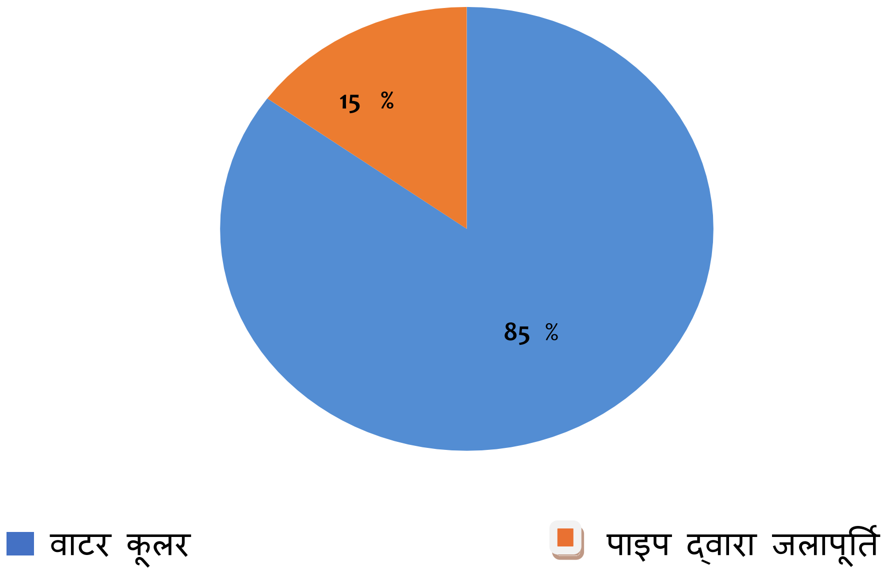

अधिकांश विद्यार्थियों ने उत्तर दिया कि उन्हें स्कूल में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध रहा है तथा सतत विकास लक्ष्य 6 के स्वच्छता पहलुओं का अनुपालन किया जा रहा है।

प्रश्न: शौचालय सुविधाओं की स्थिति क्या है?

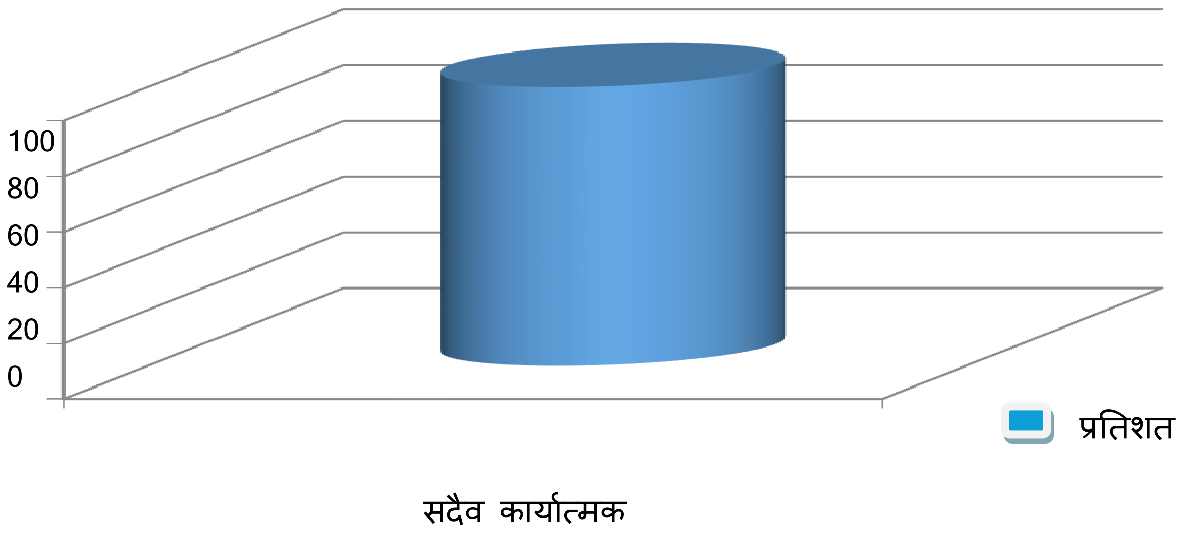

प्रश्न: क्या हाथ धोने की सुविधा उपलब्ध है?

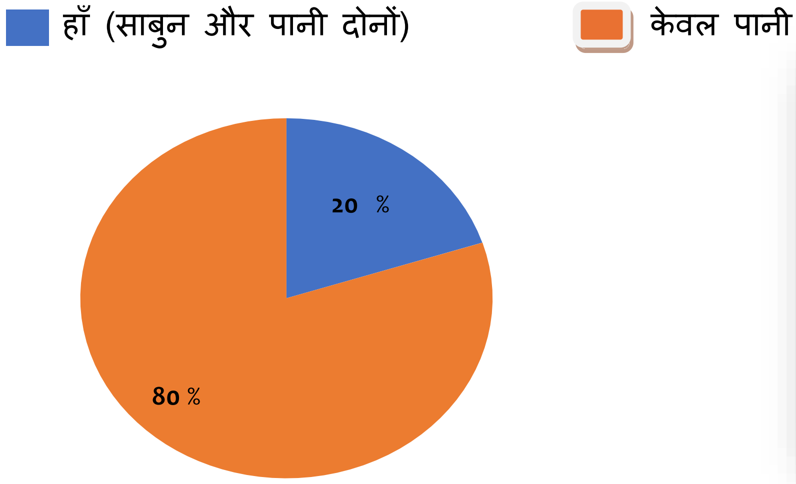

पोषण: एसडीजी-2

अच्छा पोषण स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए बुनियादी आधार है। स्वस्थ स्कूली भोजन कुपोषण को कम करता है और बच्चों के ज्ञान-संबंधी कौशल में सुधार करता है, जो बच्चों की कक्षा में बेहतर भागीदारी को दर्शाता है। 'नैवैद्यम' पहल को दोबारा से प्रारंभ करने से सभी बच्चे संतुष्ट हैं। वे अपने स्कूल में दिये गये भोजन से खुश हैं।

यह पाया गया है कि स्कूली भोजन बच्चों की स्कूल में भागीदारी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। टीएचडीसी ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और इस स्कूल में बेहतर परिवर्तन लाने में सहायता की है। स्कूल का भोजन कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन के मामले में संतुलित है। विजिट के दिन बच्चों को दही के साथ पौष्टिक सब्जी बिरयानी उपलब्ध कराई गई जिसका छात्रों ने भरपूर आनंद लिया।

स्कूल ने विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सफलता प्राप्त की है

भूखमरी का उन्मूलन सतत विकास लक्ष्यों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, इसलिए टीएचडीसी द्वारा स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन का प्रावधान उस लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है।

प्रश्न: आप स्कूल के भोजन से कितने संतुष्ट हैं?

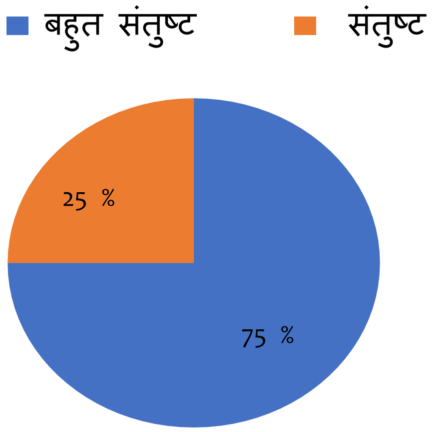

शिक्षकों का सर्वेक्षण

सर्वेक्षण में शामिल लगभग 80% शिक्षकों ने स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। ऐसा माना जाता है कि बेहतर योग्यता वाले व्यक्ति ने किसी विषय को सीखने और समझने के लिए अधिक समय दिया है और वह छात्रों को बेहतर तरीके से समझा पाएगा। इसके अलावा, लगभग समान प्रतिशत शिक्षकों के पास 2 वर्ष से अधिक का कार्य अनुभव है, इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उन्हें इन छात्रों के सामर्थ्य और कमियों से निपटने का अनुभव है। पाठ योजना बनाना शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है और एक घंटा समर्पित करने वाले शिक्षक उसी के विषय में अपनी समझ प्रदर्शित करते हैं।

इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि अन्य गतिविधियों के आयोजन में समय व्यतीत करने वाले शिक्षकों को अवकाश लेने का अवसर प्राप्त हो, ताकि शिक्षण कार्य से किसी प्रकार का कोई समझौता न हो।

लगभग 60% शिक्षक स्वीकार करते हैं कि उनके डिजिटल कौशल बहुत अच्छे नहीं हैं। साथ ही कई लोग सोचते हैं कि उनके कैरियर विकास में सहायता करने के लिए प्रदान किए गए कोई भी पाठ्यक्रम बहुत प्रभावी नहीं रहे हैं। ये लाल झंडे वाले क्षेत्र हैं जहाँ सेवा-टीएचडीसी इस पर विचार कर सकती है। इसके अलावा, जबकि शिक्षक अपने कार्य के लिए अधिक भुगतान चाहते थे, प्रिंसिपल, साथी शिक्षकों और छात्रों से अपने कार्य के लिए प्रतिक्रिया प्राप्त करने की इच्छा एक रचनात्मक दृष्टिकोण का संकेत है, जहाँ उन्हें आशा है कि उनके साथी और उनके छात्र उनके प्रयासों से संतुष्ट हैं। जबकि टीएचडीसी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, आने वाले वर्षों में उसकी ओर से और अधिक योगदान से स्कूल और उसके शिक्षकों को आगे बढ़ने में सहायता मिलेगी।

डिजिटल साक्षरता और पाठ्यक्रमों से संतुष्टि शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में योगदान कर सकती है, जिससे कार्यक्षमता बढ़ाने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

टीएचडीसी इंटर कॉलेज, भागीरथीपुरम,
टिहरी गढ़वाल

टीएचडीसी इंटर कॉलेज भागीरथीपुरम में 6 से 12 तक की कक्षाएं शामिल हैं और यह सह-शिक्षा विद्यालय है। उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले के चंबा ब्लॉक में स्थित, इस स्कूल का प्रबंधन टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी द्वारा किया जाता है और टीएचडीसी से स्कूल को सहायता प्राप्त होती है। स्कूल का शैक्षणिक सत्र हर वर्ष अप्रैल के महीने में प्रारंभ होता है और इसमें हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाया जाता है। प्रत्येक मौसम में स्कूल तक पैदल चलने वाली सड़क के ज़रिए पहुंचा जा सकता है।

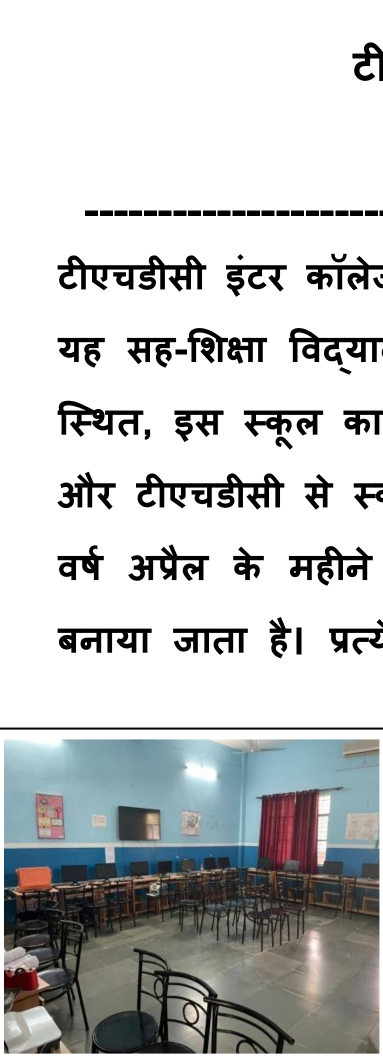

उत्तराखंड बोर्ड से सम्बद्ध इस विद्यालय का पक्का बुनियादी ढांचा काफी अच्छी स्थिति में है। प्रत्येक कक्षा के

लिए अलग-अलग कक्षाएँ हैं। इसके अलावा, अन्य उद्देश्यों, विशेष रूप से सह-पाठयक्रम गतिविधियों के लिए अलग-अलग कमरे भी बनाए गए हैं। इसके अलावा, प्रधानाचार्य, कर्मचारियों के लिए अलग-अलग कमरे, बिजली की उपलब्धता, वाटर कूलर और विद्यालय परिसर में स्वच्छ पेयजल सुनिश्चित करने के लिए पाइप से पानी की आपूर्ति यह दर्शाती है कि टीएचडीसी द्वारा कितना उपयोगी योगदान दिया गया है।

खेल का मैदान और एक अच्छी तरह से भंडारित पुस्तकालय के साथ- साथ कंप्यूटर कक्षाओं के लिए एक अलग कमरा यह दर्शाता है कि टीएचडीसी द्वारा स्कूल और छात्रों के सर्वांगीण विकास ध्यान रखा जाता हैं। यह तथ्य है कि शारीरिक विकास को मानसिक विकास के बराबर महत्व दिया गया है, जहाँ शिक्षकों और छात्रों को आज की दुनिया के साथ चलने हेतु आवश्यक डिजिटल कौशल से युक्त करने पर ध्यान दिया गया जो एक सकारात्मक परिवर्तन है।

सबसे वरिष्ठ कक्षाओं के 20 छात्रों पर एक सर्वेक्षण किया गया ताकि वे प्रश्नावली को बेहतर ढंग से समझ सकें और उसका उत्तर दे सकें। निम्नलिखित चार्ट छात्रों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है।

टीएचडीसी इंटर कॉलेज में लड़के और लड़कियों की संख्या

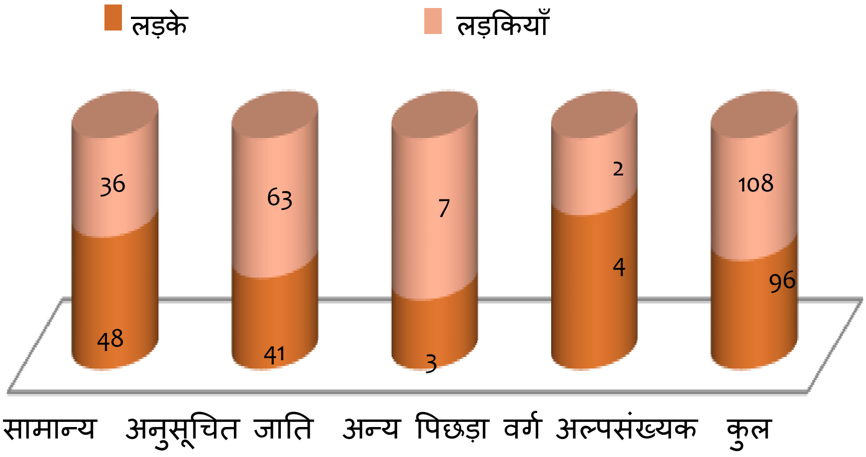

पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या लड़कों की अपेक्षा ज़्यादा है। इससे पता चलता है कि धीरे-धीरे आम जनता इस बात को लेकर जागरूक हो रही है कि लड़कियों को शिक्षित करना कितना आवश्यक है। इसके अलावा, अनुसूचित जाति और सामान्य वर्ग के छात्रों का उच्च नामांकन यह दर्शाता है कि समाज के सभी वर्गों के मध्य शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता का स्तर है।

बोर्ड परीक्षा में शैक्षिक प्रदर्शन की बात करें तो परीक्षा में शामिल हुए 32 में से 30 छात्र उत्तीर्ण हुए। सबसे अधिक 80.2% अंक शिवम बंगवाल नामक छात्र ने प्राप्त किए, जिन्होंने 401/500 अंक प्राप्त किए। यह देखा जा सकता है कि 'परीक्षा पे चर्चा' (27 जनवरी 2023) जैसे कार्यक्रम आयोजित करने से उन छात्रों का मनोबल बढ़ता है जो अपने सपनों को हासिल करने के लिए संघर्ष करते हुए दैनिक जीवन की समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करते हैं।

शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा, स्कूल ने अन्य गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के विकास पर भी ध्यान केंद्रित किया है। 18 अप्रैल 2022 को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल द्वारा बच्चों के लिए आयोजित एक अग्नि सुरक्षा कार्यशाला में बच्चों को अग्नि सुरक्षा से संबंधित बुनियादी जानकारी क्या करें और क्या न करें की जानकारी देने की आवश्यकता पर बल दिया गया, ताकि आग लगने की स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति अपनी और अपने आस-पास के वातावरण की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके।

किसी भी बच्चे के सफल होने के लिए विनम्र कौशल उतना ही आवश्यक है जितना कि शिक्षा के क्षेत्र में उसका प्रदर्शन। निबंध लेखन प्रतियोगिता में शिवम बंगवाल (कक्षा 12) विजेता रहे, चित्रकला प्रतियोगिता में प्रियंका (कक्षा 6) विजेता रही और नारा लेखन प्रतियोगिता में शिवम बंगवाल (कक्षा 12) विजेता रहे। इन प्रतियोगिताओं से पता चलता है कि स्कूल बच्चों को ऐसे कौशल से युक्त करने की दिशा में प्रयास कर रहा है, जो वास्तविक दुनिया में उसकी सफलता का

निर्धारण करने की दिशा महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। प्रतियोगिताएं 16 मई 2022 से 31 मई, 2022 के बीच आयोजित की गईं।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस (31 मई) पर तंबाकू के विरूद्ध विरोध करने की शपथ का आयोजन करके सभी विद्यार्थियों को यह संदेश स्पष्ट रूप से दिया जाता है कि नशा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित 'नो ड्रग कैंपेन' कार्यक्रम (28 जनवरी, 2023) द्वारा मादक द्रव्यों के सेवन से होने वाली हानियों के विषय में जागरूकता पर और अधिक बल दिया गया है। प्रत्येक छात्र ने तम्बाकू के सेवन के विरूद्ध

शपथ ली, और उनमें इस बात के प्रति जागरूकता बढ़ी कि किस प्रकार से यह पदार्थ झूठी खुशी की भावना उत्पन्न करता हैं, आशा की जा सकती है कि यह संदेश उनके मन में अंकित हो जाएगा और भविष्य में उन्हें इसका सेवन न करने से बचाएगा।

इस बिंदु पर यह उल्लेख करना उचित है कि 'नैवैद्यम' को पुनः आरंभ करना - यह सुनिश्चित करता है कि कक्षा 6 से 12 तक के सभी छात्रों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध

कराया जाए, यह पीएम पोषण के साथ तालमेल रखने का एक महत्वपूर्ण प्रयास रहा है, जहां बढ़ते बच्चे के लिए पौष्टिक भोजन के लाभों को पूर्ण रूप से समझा गया है।यद्यपि स्कूल के पास सीमित साधन हैं, फिर भी यह देखा जा सकता है कि सेवा की सहायता से स्कूल छात्रों के समग्र विकास के लिए ईमानदारी से प्रयास कर रहा है, साथ ही यह भी सुनिश्चित कर रहा है कि शिक्षकों के पास भी अद्यतन कौशल हो, जिससे बच्चों को अच्छी शिक्षा देने में अधिक सहायता प्राप्त होगी।

इसके अलावा, जैसे-जैसे हम रिपोर्ट के कार्य को आगे बढ़ाएंगे, हम शिक्षकों और छात्रों द्वारा दिए गए प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर विश्लेषण और व्याख्या पर दृष्टि डालेंगे, जिससे कई और पहलुओं का पता चल सकेगा और यह पता चल पायेगा कि स्कूल सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के कितने समीप है।

शिक्षा की गुणवत्ता: एसडीजी-4

एसडीजी 4 'समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना तथा सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना' यह एक ऐसा लक्ष्य है जिसे केवल अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा से ही प्राप्त किया जा सकता है, जहां लड़कियों और लड़कों को शिक्षा के सभी अवसरों तक समान पहुंच सुनिश्चित की जाती है। 60% छात्र अपनी प्राप्त की गई शिक्षा की गुणवत्ता से बहुत संतुष्ट हैं। इसके अलावा सर्वेक्षण में सम्मिलित किये गये 70% छात्रों ने स्वीकार किया कि पिछली कक्षा की अपेक्षा वर्तमान कक्षा में उनके ग्रेड में वृद्धि हुई है।

इन दोनों प्रतिक्रियाओं से यह संकेत मिलता है कि नियुक्त शिक्षक अपने कार्य को गंभीरतापूर्वक लेते हैं और ईमानदारी से प्रयास कर रहे हैं, जो उनके बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन से परिलक्षित होता है। इसके अलावा, पिछली तालिका में, जो नामांकित लड़के और लड़कियों की संख्या दर्शाती है, यह स्पष्ट है कि इस स्कूल में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की संख्या अधिक है। इसके अलावा अनुसूचित जनजातियों के छात्रों का अच्छा नामांकन अनुपात शिक्षा के महत्व के बारे में विकास और समझ का संकेत दर्शाता है और यह एसडीजी 4 के मिशन "समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना" को भी आगे बढ़ाता है।

* क्या आप शिक्षा की गुणवत्ता से संतुष्ट हैं? - सर्वेक्षण में पूछा गया प्रश्न

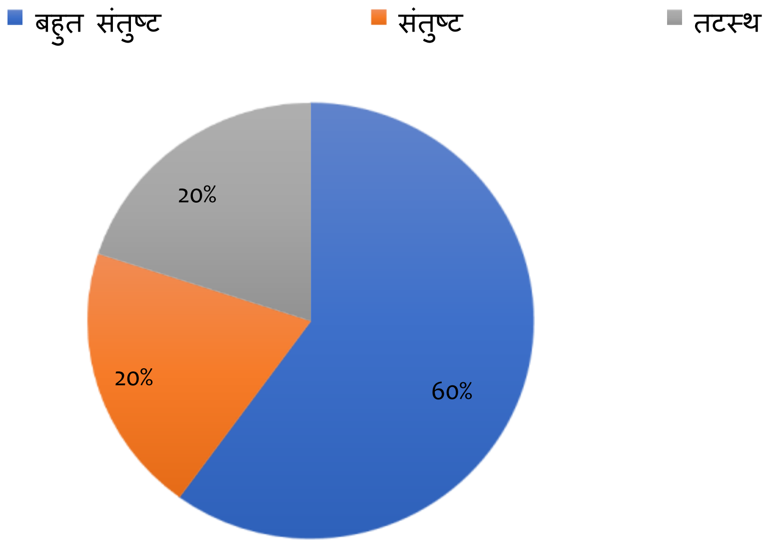

*** पिछले ग्रेड की तुलना में आपके वर्तमान ग्रेड में आपके स्कोर में क्या परिवर्तन आया है?**

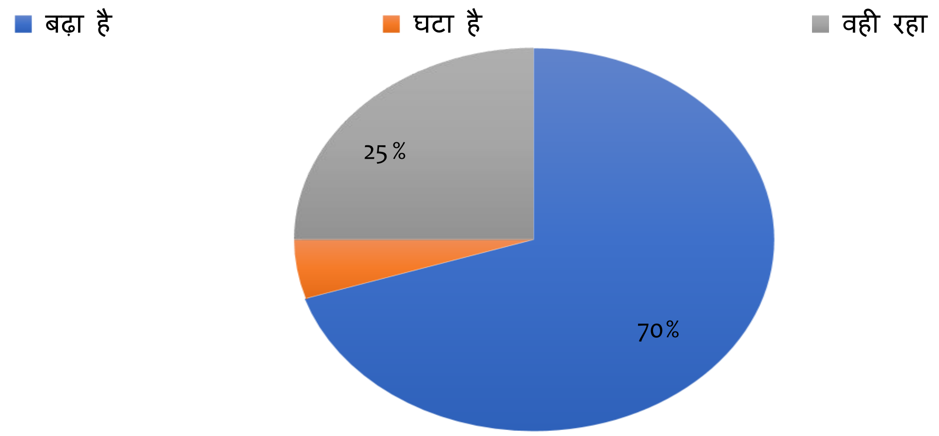

*** आपके स्कूल में मैदानों/खेल के मैदानों/कोर्टस या बॉल गेम के लिए पिचों की स्थिति क्या है?**

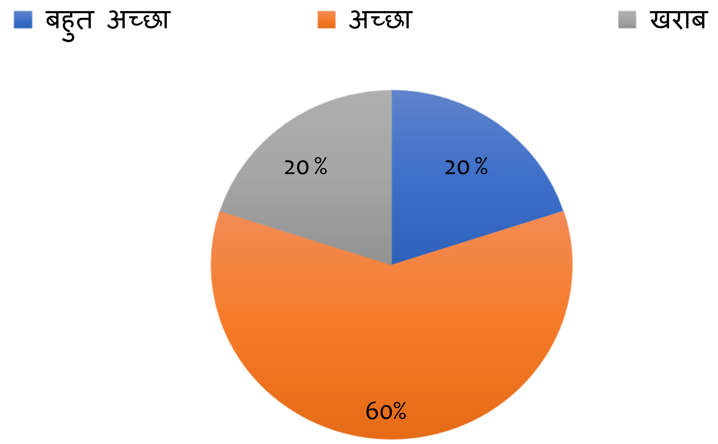

छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए अच्छे बुनियादी ढांचे का प्रावधान आवश्यक है। नीति आयोग द्वारा डिजाइन किए गए स्कूल शिक्षा गुणवत्ता सूचकांक में चार डोमेन में से एक के रूप में परिणामों के लिए बुनियादी ढांचे और सुविधाओं को सम्मलित करना यह दर्शाता है कि स्कूल के लिए अच्छा बुनियादी ढांचा कितना महत्वपूर्ण है। चूंकि 80% छात्र संतुष्ट हैं, मौखिक चर्चा से यह पता चलता है कि सकारात्मक माहौल उन्हें स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित करता है और वे प्रत्येक दिन अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए स्वयं को प्रेरित महसूस करते हैं।

वाश (जल, स्वच्छता और अन्य सुविधाएं) : एसडीजी-6

जल और स्वच्छता लोगों के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। एसडीजी 6 लक्ष्य 6 का एक पहलू पीने के पानी, स्वच्छता और हायजीन (डबलूएएसएच) से संबंधित मामलों को संबोधित करता है। यह केंद्र सरकार के 'स्वच्छ भारत' और 'जल जीवन मिशन' के लक्ष्यों के अनुरूप भी है। स्कूल में भी इसे दोहराने से बेहतर परिणाम मिलते हैं क्योंकि बच्चे अक्सर स्कूल में सीखी गई बातों का बहुत गंभीरता से पालन करते हैं।

चूंकि 75% छात्रों ने पीने के पानी के लिए वाटर-कूलर की उपलब्धता की पुष्टि की है, 95% ने कार्यात्मक शौचालय सुविधाओं के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है, और 55% ने कहा कि स्कूल में हाथ धोने के लिए साबुन और पानी दोनों उपलब्ध रहते हैं - यह देखा जा सकता है कि स्कूल ने एसडीजी-6 को पूर्ण करने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया है।

⁕ पीने के पानी का मुख्य स्रोत क्या है?

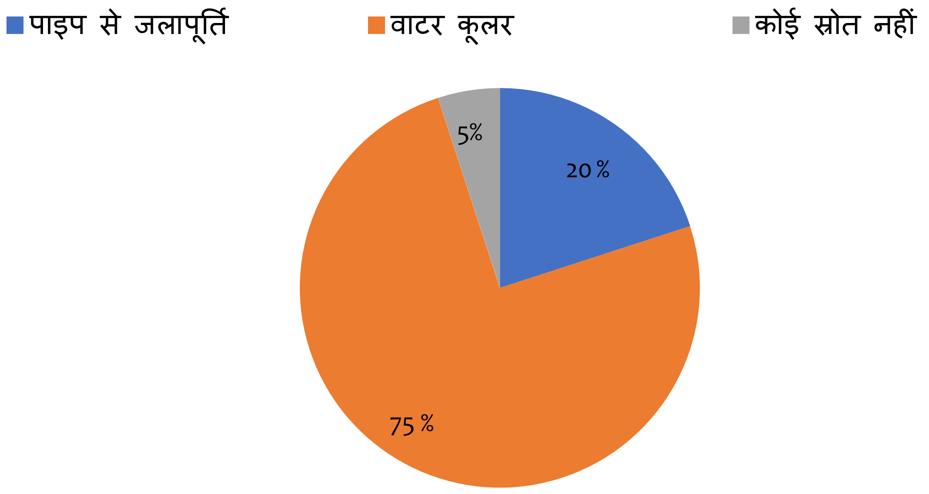

*** आपके स्कूल में शौचालय सुविधा की स्थिति क्या है?**

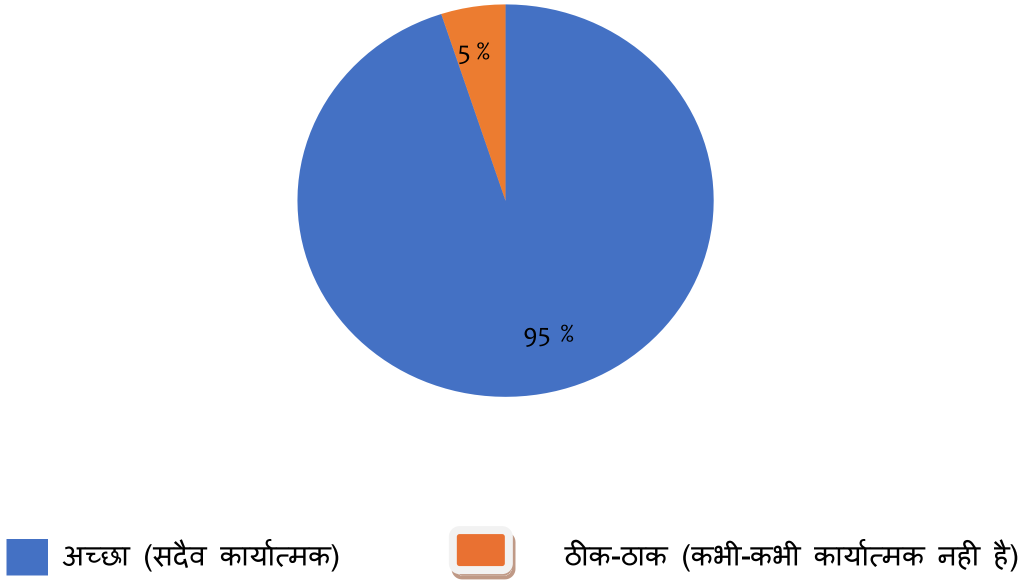

*** क्या हाथ धोने की सुविधा उपलब्ध है?**

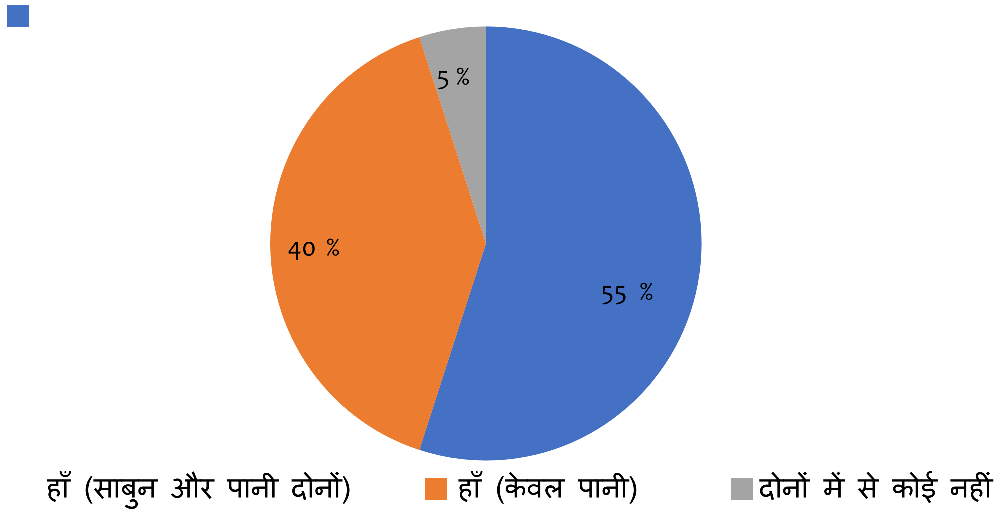

पोषण : एसडीजी-2

अच्छा पोषण और अच्छा स्वास्थ्य बच्चे के संज्ञानात्मक विकास हेतु महत्वपूर्ण है जो कुपोषण की स्थिति में बाधित हो सकता है। जबकि 55% छात्र बहुत संतुष्ट हैं और 30% संतुष्ट हैं - प्रतिक्रियाओं से पता चलता है कि कोविड के पश्चात स्कूल द्वारा दोबारा से प्रारंभ की गई

'नैवेद्यम' पहल सफल रही है। बच्चों के साथ अनौपचारिक बातचीत से पता चला कि भले ही वे संकोची हों, लेकिन वे अपने जीवन में अच्छा करने की आकांक्षा रखते हैं। स्कूल जाने से वे खुश रहते हैं और जिससे वे बेहतर करने के लिए प्रेरित रहते हैं और जब वे स्कूल में घूमते हैं तो उन्हें कभी-कभी ऐसा लगता है कि वे उन लोगों की तुलना में अधिक विशेषाधिकार प्राप्त हैं जिनके लिए स्कूल जाना एक दूर का सपना होता है। यह स्वाभाविक है कि स्टाफ और टीएचडीसी के प्रयासों दोनों ने बच्चों को मूल्यवान महसूस कराने में अधिक सहायता की है और उन्हें एक सुरक्षित स्थान उपलबध कराया है जहाँ वे उत्कृष्टता की आशा कर सकते हैं।

* आप अपने स्कूल में दिए जाने वाले भोजन से कितने संतुष्ट हैं?

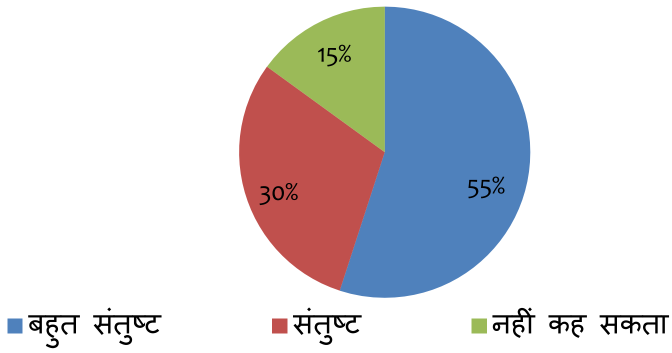

शिक्षकों का सर्वेक्षण

शिक्षक किसी भी संस्थान की रीढ़ होते हैं और 10 शिक्षकों पर किए गए सर्वेक्षण और शेष शिक्षकों के साथ अनौपचारिक बातचीत के आधार पर उनकी प्रतिक्रियाओं पर एक संक्षिप्त दृष्टि नज़र डालने से पता चलता है कि कॉलेज में क्या कमी है और किस बात ने उन्हें संतुष्ट किया है। निम्नलिखित प्रश्न स्कूल में शिक्षकों के सामने आने

वाली चुनौतियों और अवसरों के बारे में जानकारी देते हैं और भविष्य में सुधार करने में सहायता कर सकते हैं, जिससे छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए समग्र शिक्षा का अनुभव बेहतर प्राप्त हो सकता है।

⁕ आपकी शैक्षणिक योग्यता क्या है?

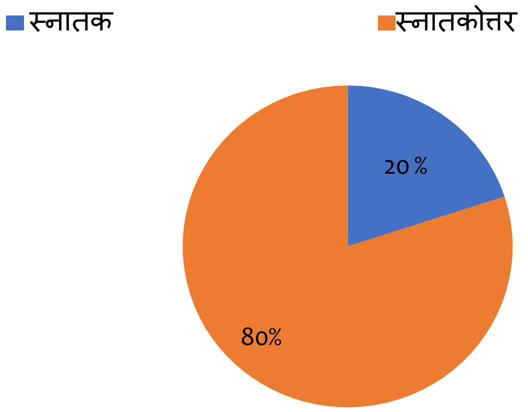

ऐसा माना जाता है कि जिस शिक्षक के पास अधिक उपाधियां होंगी है, वह आम तौर पर किसी विशेष विषय पर अधिक समय व्यतीत करेंगें और छात्रों को पढ़ाने के लिए अच्छी तरह से सक्षम होंगें है। चूँकि 80% शिक्षक स्नातकोत्तर हैं, इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छात्र सुरक्षित शिक्षकों के हाथों में हैं।

प्रश्न: आपकी रोज़गार स्थिति क्या है?

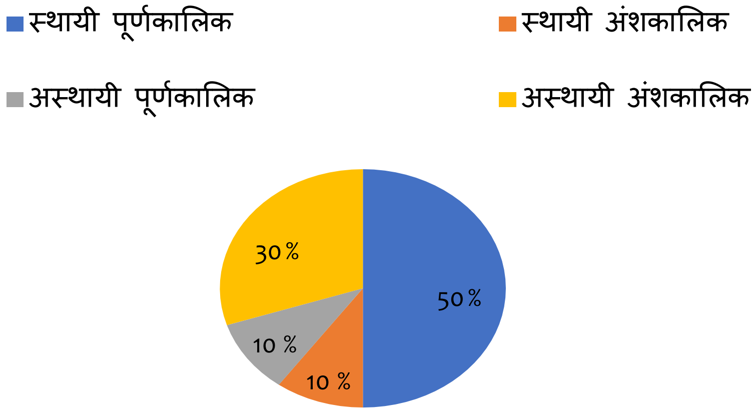

* **आपने कितने समय तक शिक्षक के रूप में कार्य किया है?**

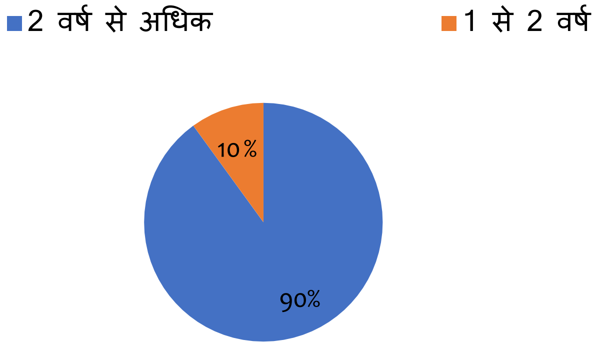

अधिकांश शिक्षक इस क्षेत्र में 2 वर्ष से अधिक समय से कार्य कर रहे हैं। यह मानना गलत नहीं होगा कि वे जो विषय पढ़ाते हैं, उस पर उनकी पकड़ बेहतर होती है। इसके अलावा, उन्हें अपने छात्रों की योग्यता और कमियों के विषय में बेहतर समझ होने की अधिक संभावना है और वे उनके अनुसार प्रगति करने में सहायता करने के लिए योजनाएं बना सकते हैं।

* **आप डिजिटल रूप से कितने कुशल हैं?**

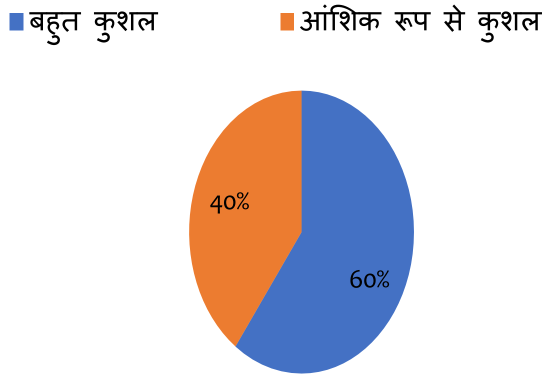

आईसीटी का उपयोग करने की क्षमता बहुत उपयोगी रही है, विशेषकर तब जब लॉकडाउन लगाया गया था। स्कूल प्रबंधन यह सुनिश्चित करने की दिशा में निवेश कर सकता है कि शिक्षक डिजिटल रूप से कुशल बनें, क्योंकि आज के समय में शिक्षा में बेहतर परिणाम देने के लिए यह समय की मांग है।

* क्या सभी शिक्षक अपने विद्यार्थियों और एक-दूसरे के साथ बातचीत करते समय निष्पक्ष रहते हैं?

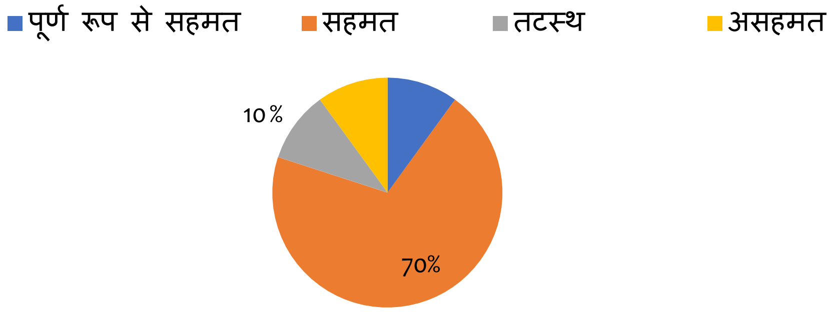

समानता का अधिकार एक संवैधानिक अधिकार है और जिन बच्चों के साथ उनके शिक्षकों द्वारा निष्पक्ष तरीके से व्यवहार किया जाता है, वे बड़े होकर ऐसे व्यक्ति बनेंगे जो समाज में मौजूद मतभेदों के प्रति अधिक सहिष्णु होंगे। शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं से पता चलता है कि उनमें सामान्यतः पक्षपात का अभाव है, जिसे एक सकारात्मक विकास माना जा सकता है।

* क्या आप किसी ऐसे कौरसेस में प्रतिभागिता करना चाहेंगे जो आपकी योग्यताओं को निखारने में सहायता करेगा?

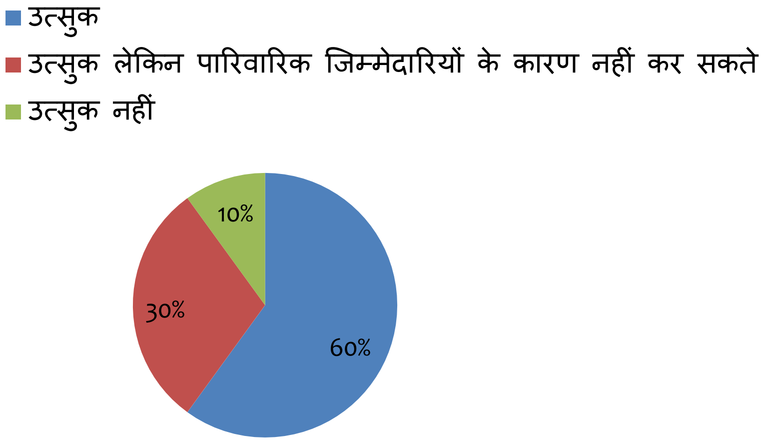

अधिकांश शिक्षक अधिक सीखने के लिए उत्सुक हैं। यहां तक कि जिन लोगों पर पारिवारिक जिम्मेदारियां हैं, वे भी इस बात पर सहमत थे कि यदि दोनों के बीच

संतुलन बनाने का अवसर मिले तो वे ऐसा करेंगे। सीखने के लिए उत्सुक होना एक अच्छा संकेत है। जिज्ञासु मन निरंतर प्रगति सुनिश्चित करने में बहुत सहायक होता है। जो शिक्षक सदैव प्रगति के लिए तत्पर रहते हैं, वे अपने विद्यार्थियों को भी प्रगति के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

* आप अपने वेतन और स्कूल की अन्य सुविधाओं से कितने संतुष्ट हैं?

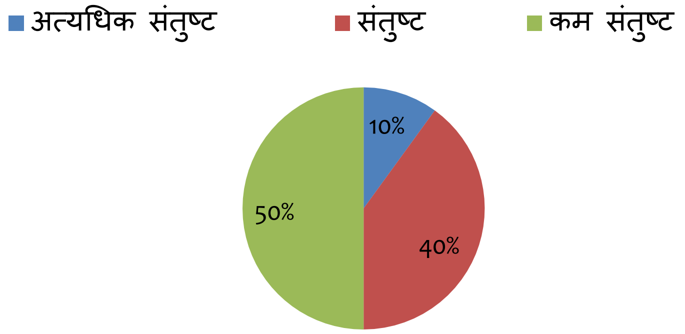

जबकि शिक्षण से काफी हद तक एक व्यक्ति में परोपकारी गुण भर देता है, जहां ज्ञान प्रदान करने और मष्तिक को सशक्त बनाने की इच्छा बहुत अधिक होती है, आज के समय में किसी व्यक्ति से संतोषजनक पारिश्रमिक के बिना किसी पेशे में 100% कार्य करने की आशा करना अवास्तविक है। आज की दुनिया में जहाँ उचित वेतन के बिना जीवित रहना कठिन है, उन शिक्षकों के लिए यह तर्कसंगत है कि वे, अपने कार्य को अपने दिल और आत्मा से करते हैं ताकि वे उचित प्रतिफल की आशा कर सकें जिससे एक सभ्य जीवन शैली की अनुमति प्राप्त हो सके।

ऐसे में जब 50% शिक्षक यह संकेत देते हैं कि वे संतुष्ट नहीं हैं, तो यह एक ऐसा मामला है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। केवल वे शिक्षक जो खुश हैं, वे ही एसइक्यूआई द्वारा वांछित शिक्षण परिणामों को पूर्ण करने के लिए अपना संपूर्ण योगदान दे पाएंगे। जैसे-जैसे शिक्षक गतिविधियों के आयोजन, पाठ योजना बनाने और पढ़ाने के बीच सामंजस्य करते हैं, उन्हें अधिक लाभ उपलब्ध करना निश्चित रूप से उनकी संतुष्टि और कार्य उत्पादकता में वृद्धि कर सकता है। टीएचडीसी ने इस दिशा में प्रयास किए हैं तथा भविष्य में भी और प्रयास किए जाएंगे।

OPPO Reno5 Pro 5G

निष्कर्ष और सुझाव

उत्तराखंड एक पहाड़ी राज्य है जो अपने दुर्गम भूभाग के लिए जाना जाता है। टिहरी गढ़वाल और ऋषिकेश में स्थित स्कूल यह सुनिश्चित करने की दिशा में बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं कि शिक्षा सबसे पिछड़े क्षेत्रों तक भी पहुंचे और कोई भी छात्र सीखने के अवसर से वंचित न रहे।

टीएचडीसी हाई स्कूल, ऋषिकेश और टीएचडीसी इंटर कॉलेज, टिहरी गढ़वाल के समीप रहने वाले लोगों के लिए अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के सपने को संभव बनाने में टीएचडीसी का योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा है। दोनों स्कूलों में अच्छी बुनियादी संरचना है, जिसमें अलग-अलग कक्षाएं हैं और पाठ्येतर गतिविधियों के आयोजन के लिए अलग-अलग कमरे भी हैं। टीएचडीसी के योगदान से यह सुनिश्चित हुआ है कि स्कूल की फीस नाममात्र की रहे तथा इन स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को लिंग या जाति के आधार पर किसी भी प्रकार के पक्षपात का सामना न करना पड़े। स्कूल में नामांकन पर एक दृष्टि डालने से पता चलता है कि दोनों स्कूलों में वर्तमान में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों का नामांकन अधिक है।

जिन माता-पिता के पास बेटियां हैं, विशेष रूप से पिछड़े पहाड़ी क्षेत्रों में, वे फीस बहुत अधिक होने पर बहुधा अपनी बेटी को पढ़ने के लिए स्कूल भेजने में संकोच करते हैं। टीएचडीसी के योगदान से 'नैवेद्यम' को फिर से प्रारंभ करने में सहायता प्राप्त हुई है, जो दोनों स्कूलों के बच्चों के लिए पौष्टिक भोजन उपलब्ध करता है। उचित पोषण बच्चे के शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास में बहुत सहायक होता है।

यह देखा जा सकता है कि दोनों स्कूल वाद-विवाद, लेखन प्रतियोगिता और चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित करते रहते हैं, जहाँ विभिन्न पुरस्कार वितरित किए जाते हैं।

यह टीएचडीसी के योगदान के कारण संभव हुआ है। जहाँ शिक्षक और अधिक प्रगति करने के लिए उत्सुक हैं और बच्चे भी प्रत्येक दिन स्कूल में प्रेरित महसूस करते हैं, वहीं दोनों स्कूलों को अनुकूल वातावरण देने में सफलता प्राप्त हुई है।

हालांकि, कई क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन किया जा सकता है, अगर उन पर अधिक ध्यान दिया जाए। सुझावों को निम्नलिखित वर्गीकरणों के अंतर्गत पढ़ा जा सकता है:

कक्षाएँ

चित्रात्मक चित्रण छात्रों को किसी भी अवधारणा को बेहतर ढंग से समझने में सहायता करते हैं। दीवारों पर टेबल और चार्ट होने से न केवल कक्षा में उत्साह बढ़ता है, बल्कि ऐसा माना जाता है कि इससे छात्रों की सीखने की क्षमता और बेहतर करने की उत्सुकता भी बढ़ेगी। स्मार्ट बोर्ड और वाई-फाई कनेक्टिविटी से वास्तविक समय पर अपडेट भी मिल सकता है, और जब शिक्षक इसे सैद्धांतिक पाठ के साथ जोड़ते हैं, तो यह आशा की जाती है कि छात्र बेहतर प्रदर्शन करेंगे।

प्रयोगशालाएँ

पुराने और खराब हो चुके उपकरणों को बदला जा सकता है। छात्रों को अधिक व्यावहारिक पाठों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में यह सिद्ध हुआ है कि इससे अधिक वांछनीय शिक्षण परिणाम प्राप्त हुए हैं।

अंतर-विद्यालय गतिविधियाँ

जबकि स्कूल में विभिन्न पाठ्येतर गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, अंतर-विद्यालय स्तर पर उन्हें आयोजित करने से प्रतिस्पर्धी भावना पैदा होगी जो बच्चों को और अधिक प्रगति करने में सहायता कर सकती है।

कैरियर प्रगति

कक्षा 9 से 12 तक पढ़ने वाले बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए विकल्पों से परिचित कराया जाता है। जबकि कक्षा 9वीं और 10वीं में पढ़ने वाले बच्चों को उन

सभी संभावित कैरियर क्षेत्रों और विषयों के बारे में बताया जाता है जिन्हें वे सीनीयर सेकेण्डरी स्तर पर चयन कर सकते हैं, कक्षा 12वीं के छात्र कैरियर के उन क्षेत्रों के बारे में जागरूकता प्राप्त कर सकते हैं जो केवल चिकित्सा या इंजीनियरिंग तक ही सीमित नहीं हैं।

इन कक्षाओं के बच्चों के अभिभावकों को भी इस बात पर प्रकाश डालने के लिए सम्मिलित किया जा सकता है कि अपना कैरियर विकसित करना कितना महत्वपूर्ण है। कार्यशालाओं का आयोजन करना जिससे छात्रों और अभिभावकों की जागरूकता बढ़ाने में सहायता प्राप्त हो, अत्यंत सहायक साबित हो सकता है।

समय के साथ शिक्षकों के कौशल को भी उन्नत करने की आवश्यकता है और इसकी व्यवस्था स्कूल द्वारा की जा सकती है। एक शिक्षक जो पेशेवर रूप से प्रगति करेगा, वह अधिक प्रभावी होगा और बच्चों में भी आगे प्रगति करने की समान इच्छा विकसित करने में सहायता करेगा।

भ्रमण और यात्राएं

बच्चों को अधिक से अधिक शैक्षणिक संपर्क और सीखने के लिए शिक्षण यात्राओं पर ले जाने की आवश्यकता है। प्राणि उद्यान, मछलीघर और अन्य शिक्षण स्थान दीर्घकाल में उपयोगी हो सकते हैं।

प्रेरक वार्ता

चुनौतियाँ जीवन का एक हिस्सा हैं और पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोग अधिकतर इनमें से बहुत सी चुनौतियों का सामना करते हैं। ऐसे महान व्यक्तियों की जीवनियों के पठन सत्र आयोजित करना, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद सफलता प्राप्त की, युवा मस्तिष्कों में ज्योति प्रज्वलित करने में सहायक हो सकता है।

वित्तीय और डिजिटल साक्षरता

चूँकि सरकार कैशलेस समाज को बढ़ावा दे रही है, इसलिए यूपीआई जैसी अवधारणाएं, जो बच्चों के लिए अपरिचित हैं, उन्हें उनसे परिचित कराया जा सकता

है। साथ ही उन्हें संभावित हानियों के बारे में चेतावनी दी जा सकती है और बताया जा सकता है कि उन्हें कैसे रोका जा सकता है।

साइबर अपराध के बारे में जागरूकता अभियान भी आवश्यक है, ताकि मासूम मष्तिकों को स्क्रीन के पीछे चलने वाले खतरों से बचाया जा सके।

केस स्टडीज़

केस 1: टीएचडीसी के कर्मचारी फंड द्‌वारा पाँच छात्रों की स्कूली शिक्षा का खर्च किया जाता हैं, जो अनाथ हो गए हैं और जिनके पास कोई वित्तीय सहायता शेष नहीं है। टीएचडीसी ने इन पाँच छात्रों के लिए सावधि जमा की स्थापना में योगदान दिया है, जो भविष्य में उन्हें उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए सहायता करेगा। टीएचडीसी द्‌वारा किया गया यह परोपकारी कार्य इन बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने तथा उनकी शिक्षा के प्रयासों में सहायता करने में सहायक सिद्‌ध होगा।

केस 2: सचिन जोशी टीएचडीसी हाई स्कूल, ऋषिकेश से पास-आउट हैं, जिन्हें उच्च कौशल विकास के लिए पॉलिटेक्निक में भेजा गया है। खुशबू और शालिनी भी इसी स्कूल से पास-आउट हैं, जो नोएडा की कंपनियों में कार्य कर रही हैं और बहुत अच्छा

कर रही हैं। टीएचडीसी हाई स्कूल में प्राप्त की गई अच्छी शिक्षा ने उन्हें लाभकारी रोजगार प्राप्त करने में सहायता की है।

केस 3: आयुष राजपूत कक्षा 9वीं का छात्र है, जिसने 12वीं इंटर स्कूल उत्तराखंड सीनियर कराटे चैंपियनशिप में असाधारण प्रदर्शन किया है। उन्होंने चैंपियनशिप में प्रथम स्थान प्राप्त किया और उनके प्रदर्शन के लिए उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। आयुष को टीएचडीसी से वित्तीय और बुनियादी सुविधाएं प्राप्त हुई, जिससे उनका प्रदर्शन बेहतर हुआ।

केस 4: आरुषि और सुकन्या कक्षा 4 की दो असाधारण छात्राएँ हैं, जिन्होंने कराटे चैंपियनशिप में असाधारण प्रदर्शन किया। आरुषि ने 12वीं इंटर स्कूल कुमाइट कराटे प्रतियोगिता में कांस्य पुरस्कार जीता। उन्होंने प्रथम नार्थ इंडियन कराटे चैंपियनशिप में 'फाइट' श्रेणी में रजत और 'काटा' श्रेणी में कांस्य पदक भी प्राप्त किया। सुकन्या ने 12वीं इंटर स्कूल कराटे चैंपियनशिप में 'फाइट' श्रेणी में कांस्य पदक भी प्राप्त किया। उन्होंने प्रथम नार्थ इंडियन कराटे चैंपियनशिप में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जहाँ उन्होंने 'फाइट' श्रेणी और 'कुमाइट' श्रेणी में रजत पदक प्राप्त किया। दोनों लड़कियों को तैयारी के लिए टीएचडीसी से वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। यात्रा का खर्च टीएचडीसी द्वारा वहन किया गया, जिससे उन्हें अपने प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता प्राप्त हुई।

केस 5: स्कूल प्राधिकारियों ने सभी छात्रों को प्रशिक्षण, बुनियादी सुविधाएं और अंतर-विद्यालयी प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करके उनकी खेल गतिविधियों में सहयोग किया।

यह बात मुख्यमंत्री उदयमान खिलाड़ी उन्नयन योजना 2023 में जिला स्तर पर दो छात्रों के असाधारण प्रदर्शन से परिलक्षित हुई। कक्षा 5वी के छात्र अक्षत तिवारी और कक्षा 7वी की छात्रा सपना गुप्ता को एथलेटिक्स श्रेणी में जिला स्तर पर योजना के तहत चयनित किया गया।

केस 6: आशीष भट्ट टिहरी गढ़वाल के टीएचडीसी इंटर कॉलेज के पूर्व छात्र हैं, जो वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में विज्ञान में पोस्ट डॉक्टरेट की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। वे यहां के सभी छात्रों के लिए एक आदर्श हैं और उनका दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत यहां के छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

केस 7: टीएचडीसी स्कूल ने पूर्व में कई सफल छात्रों को तैयार किया है, जिन्होंने सरकारी और निजी क्षेत्र में प्रतिष्ठित पदों को प्राप्त किया है। इसका एक उदाहरण

श्री आनंद किशोर हैं, जो उत्तराखंड सरकार
में सहायक अभियंता बन गए।

केस 8: आशीष टिहरी गढ़वाल परिसर में पढ़ने वाला 10+2 का छात्र है, जो बेहद गरीब पृष्ठभूमि से आता है। स्कूल ने उसे पढ़ाई का अवसर प्रदान किया ताकि वह लाभदायक रोजगार प्राप्त कर सके और समाज के लिए योगदान दे सके। उससे बात करते समय, उसने बताया कि वह प्रत्येक दिन दूर के गाँव से स्कूल आता है और घर लौटने पर दैनिक कार्य करता है। अगर स्कूल ने 12वीं तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान नहीं की होती, तो उसके लिए आगे की पढ़ाई करना असंभव हो जाता।

केस 9: आदित्य कक्षा 7वीं का छात्र है जो अपनी बहन तमन्ना के साथ प्रत्येक दिन स्कूल आता है। उनसे बातचीत करते समय उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वे स्कूल में दी जा रही शिक्षा और बुनियादी ढाँचे के स्तर से बेहद संतुष्ट हैं। उन्होंने पाया कि कंप्यूटर और विज्ञान प्रयोगशालाएँ पर्याप्त हैं और इससे सीखने का समृद्ध अनुभव भी मिलता है।

केस 10: पिछले शैक्षणिक वर्ष में, कुछ छात्रों को अच्छे कॉलेजों में प्लेसमेंट मिला था जो टिहरी गढ़वाल के स्कूल में अन्य छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत साबित हुआ। 10+2 के छात्र से बातचीत करते हुए, गरीब परिवार से आने वाले प्रियांशु को भी बड़े शहरों के बच्चों की तरह ही अधिकारी बनने की आशा है। स्कूल में दी गई शिक्षा उनके लिए एक प्रारंभिक प्रयास है और उन्हें आशा है कि एक दिन वह अपनी सपनों को पूरा कर सकेंगे और अपने माता-पिता और समुदाय को गौरवान्वित कर सकेंगे।

संदर्भ:

1.CSR budget for FY 2022-23. (URL:
https://thdc.co.in/sites/default/files/CSRBudget2022_23.pdf)

2. CSR policy of THDC (URL:
https://thdc.co.in/sites/default/files/CSR_Policy_2023.pdf)

3. List of approved CSR projects (URL:
https://thdc.co.in/sites/default/files/ApprovedProject2022_23.pdf)

4. CSR rules according to the Companies' Act, 2013. (URL:
https://www.mca.gov.in/Ministry/pdf/FAQ_CSR.pdf)

5. https://thdc.co.in/en/content/company-

thdcil#:~:text=THDC%20India%20Limited%20is%20a,of%20India.